Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

March' 2008



પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧. ○ Publisher : Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1.





1

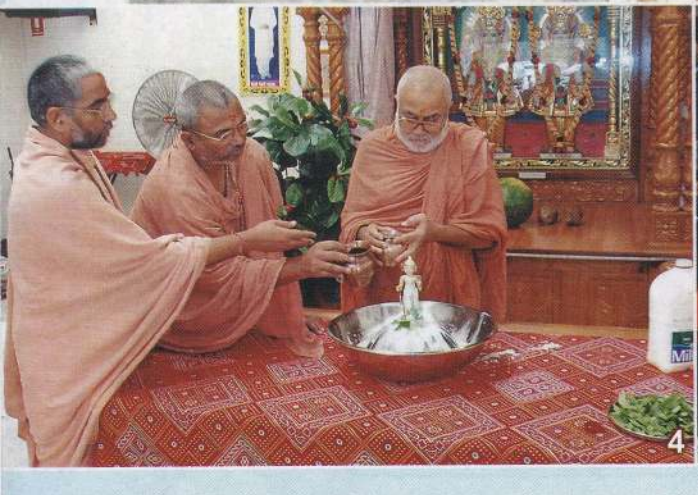


2

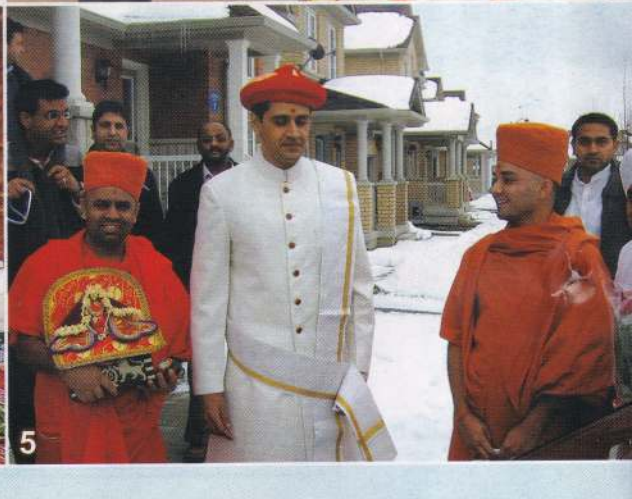


3





4



5

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर में आरती उतारते हुए हरिभक्त

२. धरियावद (राज.) मंदिर में पाटोत्सव अभिषेक की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

३. कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर की समूहपूजा में हरिभक्त

४. अपने सीडनी (ओस्ट्रेलिया) मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए भुज मंदिर के संत

५. केनेडा टोरन्टो में ठन्ढी के बरफीले वातावरणमें हरिभक्तों के यहाँ संत मंडल के साथ पदार्पण करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम नारायणपुरा,
अहमदाबाद. फोन : २७४९९५९७,
९८२५३०९५९७ फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 1 अंक : 11 मार्च -2008

अनुक्रमणिका

१ अस्मदीयम ०२
२ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ०३
3 मूली वसंत पंचमी के उत्सव प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की अमृतवाणी ०४
४ हे युवानो !! ०६
५ मृत्यु भय ०७
६ वचनामृत-कारीयाणी ०९
७ श्री स्वामिनारायण म्युझियम १०
८ सत्संग सुरभि १२
९ सत्संग बालवाटिका १५
१० भक्तिसुधा १६
११ प्रश्नपेटी १८
१२ समाचार वृत्तांत १९

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अपनी भारत भूमि अति पुण्य शाली है। इस अलौकिक दिव्य भूमि पर अखिल ब्रह्मांड के अधिपति लोक के अधिष्ठाता इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने उत्तर प्रदेश में अयोध्या के पास छोटे से गाँव छपैया में अवतार धारण किये थे। अवतार धारण करने से पूर्व इस गाँव का कोई अस्तित्व नहीं था। भारत के नक्शे में इसे ढूंढने के लिये बिलोरी दर्पण की जरुरत पड़ती थी जब कि महाराज के अवतार के बाद यह छपैया गाँव आज विश्व में प्रसिद्ध हो गया।

सर्वोपरि श्री बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के स्वरुप में संवत २०३७ के चैत्र शुक्ल-९ को छपैया गाँव में भक्ति माता से रात्रि १०-१० मिनट प्रगट हए। जिसे हम आज २२७ वाँ प्राकट्योत्सव मनायेंगे। आज ही के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र भगवान का भी प्रागट्य दिन है।

संप्रदाय का सर्व प्रथम विश्व प्रसिद्ध अहमदाबाद कालुपुर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में चैत्र शुक्ल-९ (नवमी) के दिन देश विदेश के हजारों संत हरिभक्तों की उपस्थिति में उत्सव मनाया जायेगा। ऐसे अलौकिक उत्सव का जो भी दर्शन करेंगे, चाहे वह जैसा भी होगा, उसके अंतकाल में ऐसे उत्सव की झांकी एकबार भी आजायेगी तो निश्चित ही उसका कल्याण होगा। ऐसा संदेश भगवान स्वामिनारायण ने दिया है।

इसलिये प्रतिदिन आने वाले फाल्गुन शुक्ल ३ के दिन सभी श्रीहरि के आश्रितजन श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव में तथा चैत्र शुक्ल ९ रामनवमी एवं सर्वोपरि श्रीहरि स्वामिनारायण भगवान के प्राकट्योत्सव को अर्थात् दोनो उत्सवों को अपने लाखों काम छोड़कर मनाने के लिये अवश्य भाग लें तथा दर्शन करके जीवन को धन्य बनायें।

ऐसी देव दुर्लभ शरीर मिली है, उसमें भी ऐसा सत्संग मिला है, उससे भी बढकर भगवान नरनारायणदेव एवं धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री मिले है, इसलिए अपने अंतिम जन्म को सफल बना लेना चाहिए। यही उत्सव मनाने का प्रयोजन है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- साधु नारायणस्वरुपदास का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

फरवरी -२००८

८. टपलपरा, कोठ तथा जवारज (धोलका देश)
गाँव में सत्संग सभा प्रसंग में पदार्पण।

९. श्री बाबुभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, पालडी।

११. मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी के उत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४. श्री स्वामिनाराण मंदिर टोरडा पारायण पाटोत्सव तथा सुवर्ण कलश महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१५. लालोडा (ता. ईडर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा शाकोत्सव-पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री राकेशभाई काठिया के यहाँ पदार्पण, मणीनगर। ✤ श्री धर्मेन्द्र बाबुलाल पटेल के यहाँ पदार्पण।
श्री मनुभाई चुनीलाल सोनी के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा।

१७-१८. धरियावद (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९. वासणा अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
कलोल श्रीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर की आरती उतारने पधारे। ✤ श्रश्री स्वा. मंदिर मोखासण के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२०. भीमपुरा गाँव में (ता. माणसा) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२१. श्री अमृतभाई नरसिंहभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मणीनगर।

२२. रिद्रोल (जि. गांधीनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
उनावा गाँव में श्री रमणभाई मणीलाल त्रिकमभाई के यहाँ पदार्पण।

२३. श्री अशोकभाई मोहनभाई बोरड के यहाँ पदार्पण, एप्रोच-बापूनगर।

२४. लींबडी (मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
"संदेश" पेपर आयोजित अपने कालुपुर मंदिर के 'संस्कार ज्ञान उत्सव' में आशीर्वाद प्रसंग पर पदार्पण, नवरंगपुरा।
श्री अरविंदभाई पी. ठक्कर के यहाँ पदार्पण एवं अन्य हरिभक्तो के यहाँ पदार्पण, जोधपुर सेटेलाईट।

२५. लूणावाडा श्री स्वामिनाराय मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२६. नारायणघाट श्री स्वा. मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण। ✤ लांधणज श्री स्वा. मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२७. विहारी श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२८. भावपुरा गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२९. हरिपुरा (ता. विरमगाँव) श्री स्वामिनारायण मंदिर के जपयज्ञ अवसर पर पदार्पण।

अहमदाबाद कालुपुर श्री मंदिरमां मंदिरमां फूलदोलोत्सव

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर मे फागण सुद-१५, ता.२१-३-२००८ को शुक्रवार के दिन दोपहर १२-०० बजे श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव धामधुम से मनायेगे, समस्त सत्संग को दिव्य लाभ होने का भावपूर्ण निमंत्रण

मूली वसंत पंचमी के उत्सव प्रसंग पर

प.पू. आचार्य महाराजश्री की अमृतवाणी

सत्संग



न मिला होता तो ऐसे भगवान की पहचान नहीं हुई होती। अपनी दशा क्या होती ? भगवान मिले तो ही हम सुखिया हुए। हम भगवान स्वमिनारायण के ऋणी है। एक-एक श्वास भगवान की इच्छा से ले रहे हैं। भगवान का हम पर बहुत उपकार है। मुक्तानंद स्वामी के पद प्रति सायंकाल की चेष्टा में बोलते हैं। लेकिन ये पद धीरे धीरे अब बोलना बन्द हो रहे हैं। ये पद बहुत भाव के साथ अवश्य गाना चाहिए। जल्दी बोलने से उसका भाव खत्म होजाता है। रे.... श्याम ..... तमे सांचु नाणुं ..... यह गाते हैं, इस में मुक्तानंद स्वामी कहते हैं कि ब्रह्मा से कीट तक देखे सभी झूठा लगा। जाणीने वगोव्युं ..... इस पद में भार है। संत स्वयं सुख का अनुभव किये किसी के कहने से मन्थन नहीं किये, स्वयं के हृदय का भाव व्यक्त किये। जिससे पुनः सुख में मन ललचाये नहीं इस दृढता पर स्वामी ने बल दिया है।

महाराज संतो की कसौटी करते - नियम परिवर्तित करके देते। संत भगवान की महिमा जान गये थे। इसलिये महाराज की आज्ञा को आनन्द के साथ स्वीकार करते थे। एकवार ब्रह्मानंद स्वामी से अलग अलग नियम-प्रकरण के विषय में महाराज ने कहा कि स्वामी ! संतो को हम इतना परेशान करते हैं तो संत हमें छोड़कर अन्यत्र क्यों नहीं चले जाते हैं ? तब ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा महाराज आप के सिवाय सकल ब्रह्मांड में अणु मात्र जगत में दूसरा कोई भगवान दिखाई दिये होते तो आप को छोड़कर कब का चले गये होते। परंतु आप के सिवाय जगत में कहीं सुख नहीं है। तथा आप जैसा भगवान भी नहीं है। आप जैसे रखेंगे। वैसे हम रहेंगे, आप को छोड़कर हम कहीं जायेंगे नहीं। आज इस दुनिया में चारो तरफ विकट परिस्थिति है। मंदिर के बाहर माया राह देखकर बैठी है। भगवान का आश्रय छोड़कर ज्यो बाहर गये कि माया धर दबोचेगी। "जिस प्रकार मंदिर की सीढी उतरते जाते हैं। उसी तरह अंतःकरण से भगवान भी उतरते जाते हैं। ऐसी माया है। भगवान को प्रसन्न करने के लिए जगत को छोड़ना पड़ेगा।

धरती कंप आया उस समय एक धनवान कुटुम्ब अपनी हवेली में था वह सोना-जवाहरात-रुपये पैसे सभी लेकर नीचे उतर गया। स्त्रियां भी अपना गहना गुरिया लेकर सुरक्षित नीचे उतर गयीं। लेकिन ये अमूल्य धन जिसके लिये लेकर बाहर आये वह बेटा तो भीतर सो रहा था। उसे कोई याद नहीं किया। इसी तरह जो सच्चा वारसदार है उसे छोड़कर हम माया की तरफ दौड़ रहे हैं। ध्यान देने की बात तो यह है कि हमें हमारे पूर्वजो ने वृद्धो ने, संतोने जो वारसा में दिया है उसे हम अपने आनेवाली परम्परा में दें। यदि इस वारसा को अर्थात् पूजा पाठ-कीर्तन-धून उत्सवमें एकत्रित होना, संतो की वात इत्यादि को अपनी संतानों में नहीं देंगे तो वारसदार सत्संग को भूल जायेंगे। अपने वृद्धो का प्रयत्न व्यर्थ हो जायेगा। जीवन में अच्छे गुण एकत्रित करने के लिये लम्बा समय लगता है। जब कि खराब गुण के लिए समय लगता ही नहीं। इसमें एक उदाहरण देते हुए कहा कि - "ग्रीक देश में महान फिल सूफ सोक्रेटीस हो गया। वह अनेक सद्गुणी शिष्य तैयार किया। उस सोक्रेटीस को एकबार एक वेश्या मिल गयी। वह वेश्या सोक्रेटीस से कहीं मैं आपके इन सभी शिष्यों को धर्म भ्रष्ट कर दूँगी। उस समय वह सोक्रेटीस गुस्सा नहीं किया - बल्कि कहा कि देखो सायद तुम्हारा प्रयत्न सफल हो सकता है। कारण यह कि सुधरते समय लगता है - बिगड़ते समय नहीं लगता। यही इस जीव की कमजोरी है। सीढीं चढने में समय

लगता है लेकिन उतरने में समय नहीं लगता । सोक्रेटीस का काम सीढी पर चढाने का था । वेश्या का काम सीढी से उतारने का था जो जल्दी हो सकता है ।

दुकान-व्यापार - किसानी इत्यादि का वारसा सायद संतान को न दे सके तो चलेगा । लेकिन सत्संग का वारिसदार अवश्य दीजिएगा । शिक्षापत्री में महाराज ने कहा है कि मैने जो शिक्षापत्री लिखी है वह सम्पूर्ण शास्त्रों का साररुप है । महाराज ने शास्त्र ही नहीं बल्कि सत्शास्त्र का उल्लेख किया है । शास्त्र तो अनेक प्रकार के हैं, लेकिन कोई शास्त्र भगवान की तरफ नहीं लेजाते । जब कि सत्शास्त्र का आश्रय करने से हम भगवान की तरफ गति करेंगे । शिक्षापत्री के अनुसार जो वर्तन करेंगे तो चारो पुरुषार्थ स्वयं आजायेगें । जो शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन नहीं करेंगे वे दु:खी होंगे । ऐसा स्वयं अपने श्रीमुख से कहे हैं । जगत में जीव को जो सुख:दु:ख आते है वे प्रारब्धके अनुसार आते हैं । परंतु भगवान के भक्त को यदि सुख दु:ख आता है तो भगवान की आज्ञा के अनुकुल प्रतिकूल वर्तन करने से आता है । जगत के जीव को तो दु:ख माया प्रेरित आता है । जब कि श्रीजी महाराज तो महामाया का भेदन करके आये हैं । प्रकृति-पुरुष तथा ईश्वर की कोटि से ऊपर महामाया है । वही माया पृथ्वी पर आकर सभी को खूब परेशान करती है । इसलिये सभी लोग सावधान होकर श्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन करें । श्रीजी महाराज भेद भाव के विना आत्मीय भक्तों का कल्याण किये है, लेकिन जिनमें एकनिष्ठा भक्ति रही हो उन्हीं का कल्याण किये हैं । जूनागढ का नवाब तथा जेतलपुर की वेश्या जैसे का भी कल्याण किये है । एक माला कम फेरने वाले, धारण पारणा करने वाले की अपेक्षा जिसने श्रीजी महाराज में एक निष्ठा भक्ति की उसको खीर पिलाये है, शाकोत्सव में घी के वघार वाला शाक खिलाये । मिष्ठान खिलाकर मोक्ष का मार्ग खोल दिये । इस तरह का दयालु अवतार आज तक कोई हुआ नहीं । श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित मूर्तियों का दर्शन करते समय श्रीजी महाराज सामने खड़े हैं यह भाव रखकर दर्शन करना चाहिये । मस्तक पर तिलक चन्दन करके कोई पान की दुकान पर खड़ा हो तो कोई उसे गाली देगा, वह गाली उसे नहीं बल्कि अपने धर्म को लगती है । बेटे का खराब वर्तन उसके पिता की आबरु पर पड़ती है । इसलिये हमारा कर्तव्य है कि अपने इष्टदेव पर कोई भी लांछन न आवे जिससे सामाजिक क्षति पहुंचे । मर्यादा में रहकर अपना जीवन जीना चाहिये । इस तरह नाना प्रकार की ज्ञानप्रद आशीर्वादात्मक शिक्षा दी थी । इसके बाद पू. लालजी महाराजश्री ने हजारों की संख्या में उपस्थित भक्तों को वसंत आगमन की खुशहाली में केशर तथा रंग से तरबोर कर दिया था । ऐसा संयोग दुर्लभ है । ब्रह्मादिक देवता आकाश मार्ग से इस पल का दर्शन करके अघाते नहीं है । श्रीजी महाराज सहित पांचसौ परमहंस इस मूली के रंग महोत्सव को आकाश मार्ग में आकर देखते हैं और आनंदति होते हैं । यह दिव्य प्रसंग धन्य है । आचार्यश्री कोलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा पूज्य लालजी महाराजश्री भी धन्य है । पुन: आगामी वसंत के आगमन के स्वागत में सभी समुदाय प्रसाद लेकर अलग हुआ ।

इस प्रसंग पर मूली के महंत शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने सुंदर आयोजन किया था ।

(संकलन : शुकदेव गढवी, मूली -वर्तमान अहमदाबाद)

पृष्ठ १का चालु...

आ गई है वे भगवान के भक्त के साथ वैर नहीं करते । लेकिन जिन्हे भगवान का माहात्म्य समझ में नहीं आया वे भक्त के साथ वैर कर लेते हैं ।

ऐसे भक्त सत्संगी हो गये हों तो भी उन्हें आधा विमुख ही समझना चाहिये । जो भगवान की महिमा समझता है उसे सच्चा सत्संगी समझना चाहिये । कदाचित् कोई आधा सत्संगी होने के बाद भी अपने जीवन में परिवर्तन करना चाहता है तो आत्मसर्पण की भावना आने पर भगवान भक्त में पूर्ण श्रद्धा होने पर पुन: उसे पूर्ण सत्संगी समझ लेना चाहिये । इसलिये भक्तों की महिमा के साथ महाराजकी भक्ति जीवन डोरी है । सारा सत्संग एक परिवार है । महाराज शरीर हैं प्रत्येक आश्रित उनके रोम हैं । महाराज के प्रसादी का मानकर सभी के प्रति नतमस्तक रहना चाहिये । आत्मीयता के नाते एक दूसरे के भाव को समझकर दु:ख सुख को आपस में बांटते रहना चाहिये । यही यथार्थ प्रेम का रहस्य है . आपस के विचारों का आदान प्रदान करने से नजदीक में आयेंगे अन्यथा भगवान के नजदीक रहकर भी दूर ही समझना चाहिये । *(इति का. ९ पूर्ण)*



- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

युवान अर्थात् बगीचे में खिली हुई कलियाँ। युवान अर्थात् शक्यता का अनेक भंडार। तो युवान मित्र अपने जीवन में या सत्संग में क्रांति लाना चाहते हो या जीवन को नवपल्लवित करना चाहते हों तो पुरानी कुटेव को छोड़ दें। ज्यों-ज्यों आप सभी पुरानीकुटेव को छोड़कर श्रीजी महाराज के आज्ञानुसार सिद्धान्तों को जीवन में उतारते जायेंगे वैसे-वैसे आपके जीवन में विकास-प्रकास होता जायेगा, इस के साथ ही सत्संग भी पल्लवित होता रहेगा। इसका प्रभाव सत्संग पर ही नहीं बल्कि समाज पर भी पड़ेगा लोग आप की तरफ उन्मुख होंगे और विकास के दरवाजे खुल जायेंगे।

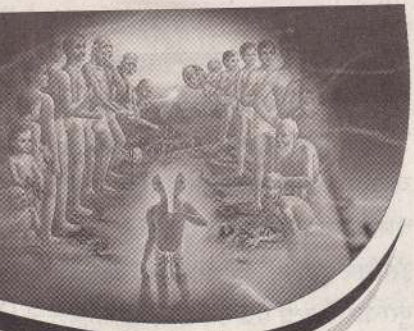
समाज में, सत्संग में या अपने जीवन में विकास करना हो तो सत्शास्त्रों का गहन अध्ययन आवश्यक है। जीवन में प्रत्याघात रुपी प्रसंगो से तथा ऐसी खराब वृत्तियों से दूर रहने के लिये विचारों को जागृत रखना आवश्यक हैं। प्रत्येक युवानों में लगनशीलता तो होती ही है, यदि वही संत समागम एवं शास्त्रों के वांचने में तथा सत्संग शिबिरो में भाग लेने में लगाई जाय तो आत्मज्ञान प्रकासित होगा, जिससे आत्मकल्याण होगा और अन्य का भी कल्याण होगा। सत्संग का इसी में कल्याण निश्चित है। युवानों को चाहिये कि वे अपने जीवन में बीते प्रसंगो को यदा करें। इससे कर्तव्याकर्तव्य का ख्याल आयेगा, फिर तो क्या वे वैषयिक गंदगी से मनको हटाकर भगवान की तरफ ले जायेंगे। परिणाम ऐसा आयेगा कि समाज, कुटुंब, नौकरी, व्यवसाय की तरफ से धीरे-धीरे श्रद्धा कम होती जायेगी और मोक्ष का मार्ग खुलता जायेगा। इसलिये मोक्षरुपी ध्येय की प्राप्ति के लिये सत्शास्त्र का वांचन, अच्छे व्यक्तियों की संगति, संत समागम करना परम आवश्यक है।

सत्संग में श्रीजी महाराज की शरणागति स्वीकार करने से पहले प्रत्येक युवानों को अपने जीवन के विषय में आत्म चिंतन करना आवश्यक है। आपके जीवन में संगति कैसी है? आप पान की दुकान में या नास्ता की लारी पर खड़े होकर गप्पा मार तो नहीं रहे हैं? या कुछ ऐसे मित्र होते हैं जो चोरी की लतवाले होते है, उनकी संगत तो नहीं करते हैं? इन्हीं सबका आपको चिंतन करना है। इन सभी से बचना है और इन्हें बचना भी है। तभी सत्संग की, समाज की, देश की रक्षा हो सकती है और आप का आत्मिक कल्याण भी हो सकता है। ऐसे युवान सत्संगी होते हुए भी सत्संग के गुण धर्म भूलकर रजोगुणी होकर कुसंगियों का साहचर्य प्राप्त करके भक्ति के रंग को भूल जाते हैं। श्रीजी महाराजने प्रथम के २० वें वचनामृत में कहा है कि व्यक्ति को स्वयं आत्मचिंतन करना चाहिये। इसके अलांवा और भी वहीं लिखा है कि जो अपने विषय में चिंतन नहीं करते जगत के विषय में सोचते है वे नीचों में नीच एवं मूर्खों में मूर्ख हैं। इसलिये युवामित्र सत्संग में आने के बाद रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण की कहाँ प्रधानता है। इसका चिंतन करना चाहिये।

प्रत्येक युवान को नये-नये कार्य करने की धगस बढती

अनुसंधान पृष्ठ - ८ पर...

मृत्यु भय



- साधु धर्मकिशोरदास (प्रयागराज यु.पी.)

मृत्यु नाम है ऐसा, भय लगे ऐसा
भय जगाओ, मृत्यु मिटाओ
भय गया, परिक्षीत का, तो मृत्यु मंगलकारी बनो
इसलिये कहता हू, भय भगाओ - मृत्यु मिटाओ

मृत्यु नजदीक है, मृत्यु से डरो, पाप करने से स्वंय को रोको, अन्यथा यह संक्रामक रोग हमें कब उठा ले जायेगा यह खबर भी नही पड़ेगी। इसलिये कहता हूँ कि स्वयं को पाप कर्म करने से रोको। वैसे तो सामान्य ढंग से देखा जाय तो सभी तब तक पाप करते हैं, आनंद करते हैं, उन्मुक्त होकर घूंमेंगे कि जब तक मृत्यु का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता। जब मृत्यु का थोड़ा भी लक्षण दिखाई देगा तो प्रभु भजन में तुरंत मन लगा देगा। क्योंकि मृत्यु का भय ही ऐसा है। एक वात तो निश्चित है कि परमात्मा ने जीवात्मा को मृत्यु का भय दिया है। जैसे जैसे मृत्यु नजदीक आती जायेगी वैसे-वैसे डर बढ़ती जायेगी।

जिस प्रकार परीक्षार्थी की परीक्षा नजदीक आती जाती है त्यों-त्यों उसे नापास होने की डर बढ़ती जाती है। इसी तरह मृत्यु का भय भी बढ़ता जाता है।

यथार्थ में देखें तो परमात्मा जीव की परीक्षा लेता हैं। यह जगत परीक्षा स्थल है। आपका जीवन उत्तर पुस्तिका है। लेकिन समय केवल तीन घंटे हैं। प्रश्न पत्र दे दिये गये है। बाल्यावस्था पूर्ण होते ही प्रथम घंटनाद बज गया। युवानी पूर्ण होते ही द्वितीय घंटनाद बज गया। तीसरी बार घंटनाद बजने वाला है क्या आपके नापास होने की डर नहीं हैं? बस इसी तरह सतत मृत्यु का भय बना रहता है।

यदि जीवन में सुख-शांति की चाहना है तो मृत्यु का भय छोड़कर केवल एक परमात्मा से डरो। जो लोग परमात्मा से डरते हैं उन्हें कभी मृत्यु से डर नहीं रहती। लेकिन खबर नहीं कि मृत्यु का नाम लेते ही सभी को कंपन होने लगता है। स.गु. गुणातीतानंद स्वामी की बातों में एक वात आती हैं -

एक वृद्ध माता तथा उसका बेटा दोनो साथ में रहते थे। सब कुछ अच्छा था लेकिन बेटा हरदम रोग से ग्रसित रहता था। कितने उपचार के बाद भी ठीक नहीं हुआ। मन की शांति के लिये बृद्धा माता कथा सुनने जाती थी। एक दिन कथा में यमराज की बात आई कि यमराज का स्वरुप बहुत भयानक है। देखने में भैंसे जैसे लगते हैं। अब तो वृद्धा माता के मन में यमराज के प्रति एक ग्रंथि हो गयी की यमराज भैंसे की तरह हैं।

एक समय ऐसा हुआ कि वृद्धा माता बरामदे में सो रही थी तथा विमार बेटा भीतर के रुम में सो रहा था। रात्रि में पड़ोशी का भैंसा खूंटे से छूटकर वृद्धा माता के पास आकर खड़ा होकर वृद्धा माता के खाट में अपनी सींह को धिसने लगा। अब वृद्धा माता जग गई, देखा तो सामने भैंसा खड़ा है। उसे तुरंत ही कथा की बात याद आ गयी। वृद्धा माता डरकर चिल्लाते हुए कहने लगी - यमराज ! यह बिमार की खाट नहीं है बिमार की खाट भीतर है। आप अंदर जाइये।

इस उपरोक्त कथन से यह समझना चाहिये कि मृत्यु का भय सभी को होता है। लेकिन जिन लोगों में भगवान की श्रद्धा है उनलोगों की मृत्यु मंगलकारी होती है। जब मृत्यु आती है तो सामने से Wel-Come करते हैं। जिस प्रकार राजा परीक्षित का जीवन जीता जागता उदाहरण है। मृत्यु की वेदना भयंकर है। शरीर तथा आत्मा दोनो जब एक दूसरे से अलग होते हैं तो असह्य वेदना होती है। जिसे में भगवान के प्रति भाव जग गया हो तो उसे यह वेदना नहीं होती।

जिसे जीवन में सुख-शांति की चाहना हो वे मृत्यु का अभ्यास करें। मरने से पहले एकवार मरके तो देखो। किसी ने लिखा है

''निर्भय स्वागत करो मृत्यु का, मृत्यु एक है विश्राम स्थल । जीव जहाँ से चलता है काया रुपी वस्त्र वहा कर ।। कोई घबड़ाने से मर नहीं जाता । लेकिन इतना अवश्य अपने मन में जो पाप तथा वासना है वह अवश्य मर जायेगी । परंतु आज का मानव बहुत चालाक है - वह मृत्यु का नाम सुनना भी नहीं चाहते । विवाह के प्रसंग पर कोई बालक भी ''रामनाम सत्य है'' बोल दे तो सभी उसको फटकारेंगे । इसलिये मृत्यु का भय जीवन में आवश्यक है । जिससे हम पाप से, दुराचार से बच सकेंगे । सभी का गन्तव्य तो एक ही है । मृत्यु का मतबल ईश्वर के पास जाने का दिन लेकिन इससे डरता कौन हैं ? जो व्यापारी व्यवस्थित अपना लेखा जोखा न करता हो । जो अपने जीवन को व्यवस्थित जीया हो उसे डर नहीं होती । परीक्षा से कौन डरता है ? जो विद्यार्थी अच्छी तैयारी न किया हो । सम्पूर्ण वर्ष जिसने पढ़ने में ध्यान न दिया हो वह डरता है । जो नियमित रहा हो वह उत्तम परिणाम की प्रतीक्षा करता है । मृत्यु जीवन की परीक्षा है । जब चाहे आजाय । पास-फेल अपने हाथ में है । लेकिन जिन्होंने जीवन में भगवान का आश्रय लिया उन्हें मृत्यु से डर नहीं होती । इसीलिये कहा है कि भगवान के प्रति भाव जगने पर ही भय दूर होगा । कितने लोग ऐसी बात करते हैं कि हमें किसी से डर नहीं है । लेकिन जब मृत्यु का भय आता है तो खबर पड़ती है कि डर क्या है ।

गाँव के बाहर एक वृद्धा माता गोबर एकठ्ठा कर रही थी । लेकिन पलड़े में इतना अधिक हो गया कि माथे पर उठा नहीं पा रही थी । इधर-ऊधर बहुत देखी कोई दिखाई नहीं दिया दु:खी होकर कहने लगी इस उम्र में भी यह करना पड़ रहा है । यह कोई जिन्दगी है । मृत्यु भी नहीं आ रही है । इतना कही कि मृत्यु सामने आकर खड़ी हो गयी । वृद्धा मां तो आश्चर्य में पड़ गई कि नाम लेते ही आकर खड़ी हो गयी । इतना जल्दी भगवान भी नहीं आते । वृद्धा हंसते हुए कही बेटा बांह थोड़ा चढ़ाव तो । जब मृत्यु आती है तो लोग डरते हैं लेकिन मरने को तैयार नहीं । पता नहीं क्यो मनुष्य मृत्यु से इतना डरता है ?गाँव के बाहर एक वृद्धा माता गोबर एकठ्ठा कर रही थी । लेकिन पलड़े में इतना अधिक हो गया कि माथे पर उठा नहीं पा रही थी । इधर-ऊधर बहुत देखी कोई दिखाई नहीं दिया दु:खी होकर कहने लगी इस उम्र में भी यह करना पड़ रहा है । यह कोई जिन्दगी है । मृत्यु भी नहीं आ रही है । इतना कही कि मृत्यु सामने आकर खड़ी हो गयी । वृद्धा मां तो आश्चर्य में पड़ गई कि नाम लेते ही आकर खड़ी हो गयी । इतना जल्दी भगवान भी नहीं आते । वृद्धा हंसते हुए कही बेटा बांह थोड़ा चढ़ाव तो । जब मृत्यु आती है तो लोग डरते हैं लेकिन मरने को तैयार नहीं । पता नहीं क्यो मनुष्य मृत्यु से इतना डरता है ?

पृष्ठ ६का चालु...

रहे। उत्तरदायित्व सम्हालने की शक्ति आवे । सतत कार्य शील बने रहें । सत्संग में जो कार्यभार दिया जाय उसे ध्यानपूर्वक करें । इस तरह प्रत्येक युवान श्रीजी महाराज के प्रति समर्पित होकर नये रचनात्मक कार्य कर सकते हैं । इससे सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहेगी ।

कारण ?

युवान अर्थात् स्वप्नों का शिल्पी
युवान अर्थात् आशाओं का मिनार
युवान अर्थात् सत्संग का सहारा
युवान अर्थात् महकता व्यक्तित्व
युवान अर्थात् सम्पूर्ण खिलता फूल
युवान अर्थात् सत्संग का अमूल्य धन

तो मित्रो ! आप यह भूलना नहीं कि आप की अमूल्य नाशवंत देह की चेतन शक्ति बड़ी तीव्र गति से आगे बढ रही है जिस की कीमत दुनिया में कोई दे सकता नहीं है । इसके साथ काल भी पीछाकर रहा है, परंतु अमावास्या की रात्रि के बादल से रक्षा करने के लिये सर्वोपरि भगवान के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, पूजनीय संत, शास्त्र तथा सत्संगी है । बस अब तो बिजली की चकाचौंधमें मोती में धागा डालने की ताकत एकत्रित करना है । कीर्तनों में लिखा है कि - मोघो मनुष्य नो वारो फेर फेरनहीं मलनारो, बिजली ना झबकारा जेवुं मोती परोवी लेवुं सत्संग कीजिये । लेकिन अंदर की ताकत को तथा अपेक्षाओं को पश्चिमी संस्कृति के झंझावात में नहीं डालना चाहिये । कारण यह कि आशायें एवं अपेक्षायें जीवनरुपी बाग की अमृत है । लेकिन अधिक आशा जीवन को उजाड़बन बन बना देती है ।

वचनामृत-अर्थयाणी

साधु घनश्यामप्रकाशदासजी जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

"हाथ में तथा कपड़े में लगी दाग तो धुल जायेगी महाराज। लेकिन हृदय की पीड़ा को कैसे दूर किया जा सकता है।"

तुम्हारे हृदय की चोट किसने दूर किया ?

कोठार में सेवा करती वृद्धा काशी मां महाराज !

"अरे ! उसे हमने मार डाला है ?"

"आप की आज्ञा से प्रभु ....." लेकिन आपकी आंख में आसूं क्यों आये प्रभु ?

बैर की चोरी करने वालो को फांसी हो गई महाराज ?

अच्छी तरह भजन करने वाली उसके जैसा कोई नहीं ....

हमारे सिवाय उसका कोई आधार भी नहीं है। देश काल के अनुसार थोड़ी लालच में आने से मति भ्रमित हो गयी ..... लेकिन मैं होता तो क्षमा कर देता ?" क्षमा तो क्या, दादा को डांटता भी, उसकी भक्ति-निष्ठा को देखकर मैं किसी से मदद भी करवाता। उसके दु:ख में दु:खी होकर सत्संग को आत्मबुद्धि सिखाने की एक नई सोपान प्रारंभ करता।

तो उसे बुलाऊ महाराज .....?

"बुलाने पर आ जाता तो जगत छोटा नही पड़ता दादा?" सगी मां से भी अधिक प्यार था। मेरी आवाज सुनकर काशी को यहाँ आने में देर नहीं। लो आवाज देता हूँ। हाँ महाराज वह वृद्धा रातदिन आपके नाम की भजन करती रहती थी। निरंतर साधु संतो की सेवा में लगी रहती थी।

ऐसी महिला को मार देने की आज्ञा दादा की उचित है क्या ? अपने मन को मनाने के लिये वृद्धा के कक्ष तक जाना पड़ेगा - महाराज ! उस दिन दादा खाचर के ऊपर जीवनभर की कमाई एक साथ उभर कर आ गयी जब महाराज दादा के ऊपर खूब प्रसन्न हुए। इस प्रसंग को पढने - सुनने या मनोरंजन के लिये मात्र नहीं समझना चाहिये बल्कि जीवन में उतारने की बात है। उनके ऊपर आत्मीयता का भाव भरा पड़ा हुआ है। हरिवर अपने उपदेशामृत में कहते हैं कि जो भगवान की महिमा को जानते हैं वे भगवान के संबन्धको प्राप्त किये है, चाहे पशु पक्षी, वृक्ष, लता इत्यादि क्यों न हों। जो भगवान की भक्ति करते हैं, नीति, नियम रखते हैं, भगवान का नाम स्मरण करते है, वे देव तुल्य हो जाते हैं। मनुष्य शरीर को धारण करके भक्त समुदाय को प्रभु स्वयं सीख देते रहते हैं।

स्थूल देह से जैसे कोई लूला, लंगड़ा, काना, कोतर, कूबर होता है वैसे ही भीतर सूक्ष्म देह मे, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा, ईर्श्या, असूया, स्नेह, स्वाद-मान इत्यादि अनंत अंत:शत्रु की खटपट चलती रहती है। लेकिन तीन देह में सदा कही-कही विक्षेप करते रहते हैं। इस दोष से हम सभी कहाँ अलिप्त हैं। इसलिये सावधान रहना चाहिये। कोमल हृदय का मानव हिमालय को पिघला देता है। सत्संग में अतिशय दयालु होना आवश्यक हैं। नदी में बाढ आजाय तो किनारे के गाँव प्राय: बह जाते हैं। पुराने वृक्ष भी बह जाते हैं। जब कि नदी के किनारे की घास पूर्ण रुप से सुरक्षित रहती है। कारण यह कि वह नमजाती है। कितनी तेज धार बाढ की हो तो भी घास नमी होने के कारण अपनी जगह पर जैसे की तैसी रहती है। इसी तरह सत्संग में भी संत भक्तों को होना पड़ेगा, तभी सत्संग का मान बना रहेगा। संत के वचनानुसार यदि भक्तों का जीवन हो तो सुखमय जीवन रहेगा। त्यागी में गृहस्थ में परस्पर आत्मीय प्रेम उन्नति का कारण है। गुणातीतानंद स्वामी ने अपनी बातो में १ प्रकरण की ३२ बीं वात में कहते हैं कि - त्याग, वैराग्य, नियम, धर्म के विषय में त्यागी को क्या करना चाहिये। चाहे कोई भी हो भगवान के प्रति भक्त की आत्मबुद्धि हो वही सत्संगी है। यदि भक्ति नहीं हो तो अखंड मूर्ति के दर्शन से क्या फायदा। इसलिये भगवान के प्रति आत्मनिष्ठा मोक्ष देने वाली है। प्रलय तक सत्संग करना है।

भगवान का तथा सत्पुरुषों का हृदयगत अभिप्राय अपने आप बाहर आ जाता है। सम्पूर्ण सत्संग के लिये लाभकारी, हितकारी यह बात कही है, अत: सभी इसे हृदय से स्वीकार करना। प्रभु आगे कहते हैं कि जिसे भगवान की महिमा समझ में

अनुसंधान पृष्ठ - ४ पर...



विश्व में अप्रतिम, अद्वितीय तथा ऐश्वर्य से युक्त श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निर्माण करने वाले पूर्व आचार्य महाराजश्री पूज्य तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (कच्छ-भुज)

श्री स्वामिनारायण महाप्रभु का दिव्य प्रताप आज के जगत में सर्वत्र फैल रहा है। महाप्रभु के अवतार काल में उनके द्वारा उपयोग की गई अनेक वस्तुओं का दिव्य संग्रह स्थान तैयार किया जा रहा है - जिस में प्रभु के उपयोगी वस्त्र, माला, खड़ाऊ, वासन, कंठी, उत्तरीय, पलंग, रजाई, गद्दी, तकिया, कम्बल, शाल, धोती, पिताम्बर इत्यादि के सुस्पर्श की दिव्यता आज भी विद्यमान है, ऐसी इनवस्तुओं को अद्यतन सामग्रियों से सुरक्षित रखा जायेगा। प्रभु ने जिन वस्तुओं का स्पर्श किया है वे सभी प्रसादीभूत है, ऐसी प्रसादी की वस्तुओं को संत तथा भक्त सभी अपनी परम्परा से प्राप्त किये होते हैं। इस विश्व में अनेकों शासक शासन कर चुके हैं। जिन्होंने अपने समकाल में जो भी उपयोगी वस्तु रही हैं जैसे - सोने-चांदी के सिक्के, शस्त्रागार में तलवार, बन्दूक, ढाल, तोप कवच, कलात्मक वस्तुएं, संगीत के साधन, उस समय के रंगबिरंगी झुम्मर इत्यादि उनके संग्रहालयों में हैं। आज तो नाना प्रकार के संग्रहालय है। वाहन व्यवहार तथा संदेश व्यवहार के साधनों का म्युझियम, मिट्टी काम चर्मकाम कांस्य कामका म्युझियम, काष्ठ कलाकृति का म्युझियम है। परंन्तु उसमें भगवान के दिव्य ऐश्वर्य का दर्शन नहीं होता है। सत्संग में जिन लोगों के पास प्रसादी की वस्तुयें हैं वे कहते हैं कि "जीवन में जितना भी कठिन समय आवे रोग-व्याधिआवे, उस समय इन प्रसादी की वस्तुओं का स्पर्श करके श्रीहरि की प्रार्थना करना चाहिये कि हे प्रभु हम इस आपत्ति से गुजर रहे हैं, अवश्य उस समय आत्यंतिक शांति का आभास होने लगेगा। यही यथार्थ है।

पूज्य बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी ने बताया कि "श्री नरनारयणदेव पीठ स्थान ऊपर ता. १३ उक्टूम्बर १९६९ को पदारुढ हुआ था। (उस के पहले लालजी महाराज के रुप में भी) उस समय से सर्वावतारी श्रीहरिने हमारे द्वारा संकल्पित संप्रदाय की पुष्टि-वृद्धि के लिये किये गये शुभारंभ (हरि मंदिर, शैक्षणिक संस्थान तथा नरनारायणदेव पीठस्थान से संलग्न गुरुकुल, प्रकाशन इत्यादि) पूर्ण करवाया। अब एकमात्र इच्छा तीन चार वर्ष से मन में म्युझियम की हैं। जिस में श्रीहरि के प्रसादी का भव्य-दिव्य संग्रहस्थान बन सके। इन अप्राप्य, दुर्लभ, अलौकिक वस्तुओं की अच्छी तरह रख रखाब नहीं की जायेगी तो, सम्पूर्ण नष्ट हो जायेगी। अथवा अयोग्य खरीदने वालों के हाथ में बिक जायेंगी।

हमारा यह संकल्प परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरण कमल में प्रार्थना के साथ समर्पित है।

अपने मंदिर की स्कीम कमेटी तथा सभी छोटे-बड़े संत एवं हरिभक्तों का खूब सहयोग मिला। कितने संत एवं हरिभक्तों से तो उनकी परम्परा से प्राप्त कीमती प्रसादी की वस्तुयें भी संग्रहस्थान में अर्पण हेतु कार्यवाही प्रारम्भ कर दिये हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम का स्थल : यह भव्याति भव्य संग्रह स्थान अपने अहमदाबाद कालुपुर मंदिर की मालिकी की जमीन में नारायण पुरा विस्तार में ३० हजार वार जितनी जगह में बन रहा है। पूज्य तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ६४ वर्ष की उम्र में रात-दिन एक कर के म्युझियम के काम में एक चित्त से लगे हुए हैं। जो छोटे-बडे सभी के लिये प्रेरणादायी हैं तथा उत्साह बर्द्धक है। पू. महाराजश्री कहते हैं कि "इस म्युझियम के नीव में एक प्रकार के दर्शन को प्रकाशित करना है। भगवान ने जिन वस्तुओं का उपयोग किया है उन सभी वस्तुओं को एक स्थान पर एकत्रित करना मात्र लक्ष्य नहीं है बल्कि यह म्युझियम स्वामिनारायण भगवान के उपदेश एवं सिद्धान्तों को बल देने वाला होगा।

म्युझियम निर्माण प्रेरक बल : प.पू. पूर्वाचार्य महाराजश्री का उपदेश है कि "इस म्युझियम के निर्माण में विशेष महत्व की बात तो यह है कि इस में भगवान श्री स्वामिनारायण के हस्ताक्षर वाले पत्रों को सर्वदर्शनार्थ प्रस्तुत करना। ये पत्र करीब ३० वर्ष पूर्व मिले हैं लेकिन हमारे पास करीब आठ वर्ष से हैं। १ रुपये के सरकारी स्टेम्प पेपर पर ता. २९ मार्च १८२५ के दिन अपने हस्ताक्षर में लिखे पत्र पर सम्पूर्ण मालिको का हक भगवान का होगा ऐसा अंग्रेजी अधिकारी के समक्ष हस्ताक्षरित

तथा अंत में भगवान का भी हस्ताक्षर है। कुबेरदास की भी सही है। भगवान जो हस्ताक्षर किये है वह स्वयं उन्हीं का है ऐसा दस्तावेज किया गया है। म्युझियम का निर्माण करना है यह विचार वर्षों से था लेकिन यह पत्र मिलते ही मेरे विचारों में दृढता आ गयी। इसी लिए आज इसे मूर्तरुप देने का निश्चय कर लिया।

महान पद त्याग : पूज्यपाद महाराजश्री कहते हैं कि करीब दो दशक से सत्संग में विचरण करते हुए यह संकल्प हुआ था। कितने सत्संगियों में विचरण करते हुए यह संकल्प हुआ था। कितने सत्संगियों के घर में तथा कितने मंदिरो में भी सर्वावतारी श्रीहरि की प्रसादी के वस्तुओं की दुर्दशा देखकर मेरे विचारों में उत्तरोत्तर दृढता बढती गयी। श्री स्वामिनारायण म्युझियम का स्वप्न था। श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के सर्वोच्च पद पर रहकर यह कार्य सम्भव नहीं था। युवान, उत्साही, व्यवहार कुशल, कार्यदक्ष चि. लालजी महाराज (वर्तमान के ध.धु. आचार्य महाराजश्री) को सम्प्रदाय की धर्मधुरा ग्रहण करने के लिये समझाया कि अब मैं म्युझियम के कार्य हेतु निवृत्त होना चाहता हूँ तो ही मुझे लालजी को समझानेमें सफलता मिली और वे स्वीकार भी कर लिये। इसी लिये इस विशाल कार्य के लिए प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री इस पद का त्याग किये।

म्युझियम की विशिष्टता : इस म्युझियम का निर्माण कार्य इ.स. २००५ से प्रारम्भ हुआ है। इ.स. २०१० तक यह प्रोजेक्ट पूर्ण होने की सम्भावना है। इस म्युझियम की विशेषता यह है कि इसमें नई टेक्नोलोजी का उपयोग किया जा रहा है। समग्र विश्व में रहने वाले यहाँ आकर स्वामिनारायण सम्प्रदाय के विषय में जानकारी ले सकते हैं। स्वामिनारायण भगवान की तथा सम्प्रदाय के विषय में यथार्थ ज्ञान कराती हुई एक छोटी फिल्म की व्यवस्था की जायेगी जो एक बड़े सेन्ट्रल होल के भीतर दिखाई जायेगी। यहाँ पर हिन्दी-गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में सभी को सूचना दी जायेगी। इस म्युझियम के लिये सत्संगियों की तरफ से प्रसादी के वस्त्र मिले है, इसके साथ भगवान ने जिस वासुंरी को बजाया था वह, किसी भक्त को राखी बांधे थे वह, जमावट वाली शाल एवं काश्मीरी शाल भी है। इसके अलांवा ग्रंथ, माला, पूजा की सामान, चरणारविंद, कलश, खडाऊँ इत्यादि वस्तुयें प्राप्त हुई है। जिन्होंने जिन वस्तुओं को दिया है उन सभी दाता के नाम भी वहाँ लिखे जायेंगे।

दर्शनार्थियों के लिये सुव्यवस्था : दर्शनार्थियों के लिये म्युझियम के प्रांगण में छोटा गार्डन बनाया जायेगा। प्रतीक्षालय तथा टोयलेट एवं वाटररुम की व्यवस्था भी की गई है। एक मेडीटेशन होल भी तैयार हो रहा है। आंख में उड़कर किर किरी आजाय ऐसी वात तो यह है कि हेन्डीकेप व्यक्ति व्हीलचेर द्वारा समग्र प्रदर्शन शांति से देख सकता है ऐसी सुंदर व्यवस्था की जायेगी।

खर्च एवं दान का प्रवाह : पूज्य बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी सत्संग अभ्युदयार्थ एशिया, आफ्रिका, यूरोप इत्यादि देशों में अनेकों वार विचरण किये है। परंतु किसी भी कार्य के लिए किसी से एक पैसे की मांग नहीं किये थे। लेकिन म्युझियम के कार्य में आज तक करीब १५ करोड़ जितना खर्च होने आया, जिसमें ४०% कार्य पूर्ण हुआ है। सम्पूर्ण खर्च करीब ३५ से ४० करोड़ का है।

भगवान के इस सत्कार्य में दान का प्रवाह श्रीहरि स्वयं प्रवाहित कर रहे हैं, इस प्रकार अनेक चमत्कारीक अनुभव हुए हैं। नारायणपुरा की एक सत्संगी विधवा मां को एक अद्‌भुत स्वप्न आया कि इस म्युझियम में पांच हजार रुपये दान करूँ और तुरंत ही आफीस में आकर दे गयी। अमेरिका के एक दाता प्रथम ५१ लाख रुपये का दान देने वाले थे लेकिन एक करोड़ का दान दिया। पचहत्तर वर्ष का मील मजदूर भक्त ने अपनी कमाई में से बचाकर पांच हजार रुपये दान किये। पैंतालिस वर्ष का एक सत्संगी अहमदाबाद के रंग महल के घनश्याम महाराज के पास यदा कदा भजन गाता रहता है। उसने बताया कि मुझे म्युझियम के लिये २५ हजार रुपये दान करने हेतु घनश्याम महाराज ने प्रेरणा दी है, मैं अपने पी.एफ. से निकाल कर म्युझियम की आफिस में दान किया पश्चात् शांति मिली। घाटलोड़ीया विस्तार में सिलाई का काम करने वाली एक महिला भक्ताने स्वेच्छया यथा शक्ति म्युझियम के लिये दान की। इस तरह अनेकों प्रसंग बने हैं।

प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने बताया कि अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति सर्वोपरि श्रीहरि का ही यह कार्य है। हमें दृढ विश्वास है कि श्रीहरि ही प्रत्येक क्षण हमें आर्किटेक, इजनेर, बिल्डर तथा दाताओं को प्रेरणा करते रहते हैं। श्री नरनारायणदेव देश की मालिकी का यह म्युझियम होगा छोटे से बड़े सभी के तन, मन, धन की सेवा हमें लेनी है। किसी दबाव के बिना सच्चे मन से दिया गया दान ही हम स्वीकार करेंगे। दाताओं के ऊपर सर्वावतारी श्रीहरि तथा स्वयं प्रतिष्ठित किये अपने स्वरुप नरनारायणदेव खूब प्रसन्न होंगे। जिसे हम अन्तर्हृदय से विश्वास दिलाते हैं।

जिस शुभ एवं अद्‌भुत कार्य के लिए पूज्य बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजीने आचार्य पद से निवृत्ति लेकर रात-दिन म्युझियम के कार्य में सतत प्रयत्न शील रहते हों तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम तन, मन, धन से सहयोग करके अपने जीवन को कृतार्थ करें, यही अपनी सद्‌भाग्य होगी।



जनमन रंजन

करने के लिये हरि वहेलाल आये

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

अहमदाबाद से मात्र २० कि.मी. दूर वहेलाल गाँव है। यह गाँव हरियाली से भरा हुआ हैं। यहाँ श्रीहरि अनेकों लीलायें किये थे। श्रीहरि जब-जब अहमदाबाद आते वहेलाल अवश्य आते थे। अपने चरण रज से इस गाँव को तथा गाँव वासियों को पुनीत किये हैं।

श्रीहरि के समकालीन भक्त भी ऐसे निष्ठावान एवं भाग्यशाली थे कि अपने मोक्ष को तो मांग ही लिया साथ ही वहेलाल में आनेवाले भक्तों के लिये भी मोक्ष का वरदान मांग लिया।

वहेलाल में जेसिंहभाई के यहाँ यदा-कहा पधारकर श्रीहरि अनेकों लीलायें किये हैं। एक समय जेसिंहभाई अपने माता-पिता तथा अन्य परिवार के साथ जहाँ पर श्रीहरि निवास कर रहे थे वहाँ दर्शन करने आये। महाराज का पूजन-अर्चन करके सन्मुख बैठे। श्रीजी महाराज उन्हें उपदेश देते हुए कहे कि - "हमारी भजन-भक्ति करना"।

महाराज ! सत्य कहूँ तो भजन बहुत कम होती है। भजन भक्ति के बिना जिन्दगी पसार हो रही है। अब मात्र आप की कृपा से ही कल्याण सम्भव है। इसलिये हे महाराज ! आप कृपा करेंगे तो ही मेरा मोक्ष होगा। अन्यथा हम तो अपने जीवन में कमाये-खाये-पीये और आनंद किये, सत्कर्म तो हुआही नहीं, भजन हुई नहीं संतो की सेवा नहीं हुई।

पिता रुगनाथ तथा जेसिंहभाई के मन में जो था वह भाव महाराज से कह सुनाया। महाराज उस पटेल परिवार पर खूब प्रसन्न हुए। क्योंकि श्रीहरि की खूब सेवा किये थे। संतो की भी खूब सेवा किये थे। लेश मात्र जिसके मन में अभिमान नहीं था। गृहस्थ होते हुए इतने निर्मानी थे। ऐसे निर्मल भाव सुनकर महाराज ने कहा "रुगनाथभाई आप तथा जेसिंगभाई दोनो पूर्व के मुक्तात्मा है। आपके मन में शंका नही होनी चाहिये कि हमारा मोक्ष होगा या नहीं ? आप भी वरदान मांग लीजिये। आप जो मांगेगे वह हम आपको देंगे।

महाराज की प्रसन्नता देखकर पिता-पुत्र ने कहा महाराज ! आप प्रसन्न हों तो वरदान दीजिये - प्रथम यह कि मेरे इस दरवाजे से जो कोई श्रद्धा से भाव से निकले उसका कल्याण हो। दूसरा यह कि हमारे अपराधको भूलकर हमारा कल्याण कीजियेगा। और अक्षरधाम में लेजाइयेगा।

श्रीहरि प्रसन्न होकर बोले "जाओ ये दोनो वरदान दे दिया। आप सभी का कल्याण करेंगे तथा अक्षरधाम ले जायेंगे। लेकिन इस दरवाजे से जो स्वामिनारायण नाम लेकर जायेंगे उन्हींका कल्याण करेंगे यह हमारा वचन है।"

आज भी श्रद्धालु भक्तजन इस दरवाजे के नीचे से श्री स्वामिनारायण भगवान का नाम लेकर निकलते हैं, उस समय उस दिव्य वचन के स्पन्दन का अनुभव होता है। जिस ऊपर के कक्ष में रहते थे वहाँ की दिव्यता का अनुभव व्यक्त ही नहीं किया जासकता।

वहेलाल गाँव के तालाब के किनारे श्रीहरि ने अनेकों बार सभा की थी जिसमें गाँव के सभी लोग आते थे। इस सभा के माध्यम से महाराज सभी को सदुपदेश करते थे। एक समय कथा में रात्रि का दश बज गया जेसिंह ने कहा महाराज ! आप तथा संत सभी थक गये हैं अत: आराम करने पधारें। आप मेरे मकान के ऊपरी कक्ष में आराम करें। महाराजने कहा जेसिंहभाई आज हम इन्हीं संतो के साथ तालाब के किनारे आराम करना चाहते हैं। उसी तालाब के किनारे अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति निद्राधारण किये।

प्रात: हुई सभी संत स्नानादि क्रिया करके पूजा पाठ किये। कुछ प्रात: कालीन गीत गाने लगे। महाराज सोते हुए सभी के कीर्तनों को सुन रहे थे।

महाराज चादर ओढकर सोते ही रहे। सूर्य अपनी किरणों को चारो तरफ फैलाते हुए आगे बढा, ऊधर गाँव के भक्तजन महाराज का दर्शन करने आये तो महाराज को शयन करते हुए देखे।

मुक्तानंद स्वामी-ब्रह्मानंद स्वामी से कहे हे स्वामी ! आप अब

महाराज को जगा दीजिए। प्रातः हो गया, भक्त भी दर्शन करने के लिये आ गये हैं। महाराज जिस बैलगाड़ी में सो रहे थे उसी के नीचे ब्रह्मानंद स्वामी पलथीमार कर भैरवी राग में सुमधुर स्वर से गाने लगे।

प्रातः थयु मनमोहन प्यारा, प्रीतम रह्या शुं पोढीने।
वारंवार करु छुं विनंती, जगजीवन कर जोड़ीने... प्रातः ॥

हे महाराज ! अब प्रातः हो गई आप जगजाईये। सारा जगजीवन आपके दर्शन के लिये हाथ जोड़कर खड़ा है। महाराज तो ऐसी निद्रा ले रहे है जैसे उन्हें कुछ पता न हो, इस तरह की लीला यहाँ किये थे।

ब्रह्मानंद सवामी पुनः आगे गाने लगे -

घर-घर थी गोवालो आया, दर्शन कारण दोड़ीने।
आंगणिये उभी व्रज अबला, यही वलोवा छोड़ी ने... प्रातः ॥

हे महाराज ! ये भक्तजन आपके दर्शन के लिये आये है। मातायें भी अपने घर का काम छोड़कर आपके दर्शन के लिये आई है। अंत में स्वामी कहते हैं -

भैरव राग गुणिजन गाये, तान मनोहर तोड़ीने।
ब्रह्मानंदना नाथ विहारी, उड़ी आलस मोड़ीने... प्रातः ॥

स्वामी पूरे लय के साथ, राग में भावपूर्वक प्रेम से भैरव राग का पद बोलते हैं। फिर भी महाराज निद्रा का त्याग नहीं किये। तो स्वामी स्वयं महाराज के पास जागर ओढी चादर को खींच देते हैं और महाराज स्वामी को देखकर हंसते हुए कहते है, "स्वामी यह गाँव कितना सुंदर है, यहाँ कितनी शांति है, हमे खुब सुख पूर्वक निद्रा आ रही है। हमें सुखपूर्वक सोने भी नहीं दे रहे हैं।

सभी संत एवं हरिभक्त बैलगाड़ी में सोकर उठे हुए प्रसन्न मुख भगवान के मंगल दर्शन करके खूब आनंदित हुए।

वहेलाल गाँव के पूर्व दिशा में खेत में विशाल खिरनी वृक्ष है। श्रीहरि उस वृक्ष के नीचे आकर निवास किये। अगल-बगल संत निवास किये। हरा भरा खेत उसी के बीच में खिरनी का यह वृक्ष था। श्रीहरि को यह स्थल इतना अधिक प्रिय लगा कि वे जब भी वहेलाल आते इसी वृक्ष के नीचे सभा करते। इस सभा में प्रायः गाँव के आबाल नरनारी प्रभु के श्रीमुख के सामने बैठकर कथा श्रवण करते।

आज भी वह खिरनी का वृक्ष वैसे का वैसे हराभरा है। इस वृक्ष के नीचे सुंदर बैठने की व्यवस्था बनाई गई है, साथ में भगवान की स्मरणिका भी बनाई गई है। इस खिरनी वृक्ष में अधिक मात्र से खिरनी होती है। आने वाले भक्तजन इसे प्रसाद के रुप में ले जाते हैं। बहुत सारे भक्त अपने घर से पकाया भोजन लाकर यहीं प्रसाद ग्रहण करते हैं। इस वृक्ष को काटने का प्रयास जो करता है तो उसका अहित होता है। जिसके खेत में यह वृक्ष है वह अपने को बड़ा भाग्यशाली मानता है।

श्रीजी महाराज ने जेसींगभाई के इस मकान के ऊपर ही मुक्तानन्द स्वामी, गोविंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, महानुभावानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी इत्यादि बड़े-बड़े संतो को परमहंसकी महा दीक्षा दी थी। ऐसे उत्तम कार्य का महायश भी वहेलाल गाँव को महाप्रभुने दिया।

जेसींगभाई के अमीन परिवार में काका के बेटे जीजीभाई एक कुशल बैद्य थे। जिन्होंने आद्याचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज का वर्षो से टूटा अंगूठा जोड़ दिये थे। जिससे प्रसन्न होकर श्रीजी महाराज ने उन्हें रेशम की शाल भेंट में दी थी जो आज उनकी परंपरा में विद्यमान है।

ऐसे इस अतिपावन श्रीहरि के चरणारविंद से अंकित वहेलाल गाँव में श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान का श्री स्वामिनारायण मंदिर बड़ा ही सुंदर है। इस मंदिर की भूमि प्रसादी की है। गांव में सर्वप्रथम वि.स. १८९० में श्रीजी महाराज की अनन्य भक्त वखतमांने वर्तमान मंदिर के बाहर बगल के रास्ते पर चौरा के पास छोटा सा मंदिर बनवाया था।

उसके पैंतालिस वर्ष बाद वि.स. १९३२ में जेसींगभाई के पुत्र अजुभाईने उस समय के सत्संगियों के साथ सहकार से उस मंदिर का विस्तार किया था। सुंदर कलाकृति वाले सिंहासन पर इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रतिष्ठा की थी। इससे भी अधिक इस मंदिर की महिमा यह है कि, यही पर बैठकर प.पू.स.गु. वासुदेवानंद स्वामीने सत्संगी भूषण शास्त्र के कुछ अंश लिखे थे।

उसके बाद इस मंदिर का नवीनीकरण ता. २-२-०२ में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से उत्साही संत चैतन्यमुनिदासजी के मार्गदर्शन में गाँव के सभी हरिभक्त मिलकर पूर्ण करके प्रतिष्ठा विधिकराये थे।

विश्व के सर्व प्रथम ऐसे स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के बिलकुल नजदीक इस छोटे से गाँव की अनगिनत महिमा की वात है। मांनो गाँव में प्रवेश करते ही शांति एवं दीव्यता का अनुभव होने लगता है। इस गाँव में अमीन परिवार के पास महाराजकी प्रसादी का पिटारा, कांसे की थाल, गद्दा, माला, दतुअन इत्यादि सभी अलौकिक वस्तुओं का दर्शन भक्तजनो को होता रहता है। वहेलाल की यात्रा करने के बाद ही यथार्थ का ख्याल आता है।



संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

स्वभाव सद्‌गुण बन जाता है

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

प्राचीन समय में दंढाव्य देश के रुप में उत्तर गुजरात प्रसिद्ध था। वहाँ के घमासणां गाँव में भावुक भक्तोंने भगवान स्वामिनारायण को भाव पूर्वक आमंत्रण दिया। आमंत्रण का मान रखकर महाराज उस गाँव में पधारे। भगवान के दर्शन से उस गाँव के भक्तों में आनंद की सीमा न रही। वे धन्य भागी हो गये।

एक समय एक ऐसी घटना बनी कि एक भक्त श्रीहरि का दर्शन करके संसार छोड़कर त्यागी बनने का निश्चय करलिया। जब प्रभु गांव से जाने को तैयार हुए तो वह भक्त भी साथ होलिया। उसका स्वभाव बड़ा कड़क था। लेकिन अपने स्वभाव को भगवान की भजन-भक्ति की दृढता में लगा दिया। बाद में ऐसी दृढता हुई कि रास्ता चलते सभी से पूछता कि आप भगवान की भजन करते हैं या नहीं ? अरे भाई आप कौन हैं ? हम कोई हो लेकिन आप भगवान की भजन अवश्य करना। अन्यथा धान के छीलके के समान कहीं फेंका जायेगे, उड़ जायेंगे किसी को पता भी नहीं चलेगा। इसलिये मैं कहता हूँ कि प्रतिदिन दो माला अवश्य फेरना। सामने वाले को ऐसा होता कि इस साधु की बुद्धि बिगड़ गई होगी। चाहे जो भी हो रास्ता चलते कोई किसी को ऐसा उपदेश देता है। संयोग से एक दिन कुछ गड़वड़ हो गयी कि - अहमदाबाद मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा था। उस समय मंदिर निर्माण का पत्थर हिंमतनगर से आ रहा था। कोई द्वेषी स्वभाव वाला ने वहाँ के दरबार को चढा दिया। दरबार साहब ने स्टे लगा दिया कि हमारे राज्य से पत्थर बाहर नहीं जा सकता। हां तो घमासणा के उस स्वामी का नाम था गुरु चरणरतानंद स्वामी। प्रायः काठी दरबार हंसने में कहा करते कि इतना लंबा नाम कैसे लिया जायेगा। तब महाराजने कहा, आप सभी पूरा नाम न लेकर मात्र गुरु स्वामी कहना। वे गुरु स्वामी अहमदाबाद आये। उन्होंने देखा कि श्री नरनारायणदेव के मंदिर का काम बन्द था। आनन्दानंद स्वामीने कारण पूछा। स्वामीने बताया कि राजाने पत्थर लाने के लिए मनाकर दिया है। यह सुनते ही वे वहाँ से चल दिये और हिंमतनगर पहुँच गये। उस समय वह राजा ईडर में था। स्वामी भी वहीं पहुँच गये। लेकिन दोपहर का समय था, राजा आराम कर रहे थे। स्वामी चलते चले जा रहे थे। चौकीदार ने पूछा स्वामी अभी आप कहाँ चले जा रहे है, महाराज आराममें हैं। तूं मुझे पहचानता नहीं है कौन हूँ। तुम्हारे राजा का गुरु हूँ। चौकीदार घबड़ा गया। जाने नहीं दूँ तो तकलीफ हैं क्योंकि सिकायत करदेंगे तो मेरी नौकरी चली जायेगी। जाने दूँ तो उससे भी अधिक समस्या खड़ी हो सकती है। लेकिन स्वामी का स्वभाव समझकर जाने दिया। राजा पलंग पर अर्धनिद्रा में सोया हुआ था। पहुँचते ही कड़क आवाज में बोले कि मरकर यमपुरी में जायेगा। ये पत्थर, यह धरती तुम्हारी है ? मंदिर का काम चल रहा था तुमने मना कर दिया। अच्छे काम में सहायता की जगह विघ्न कर दिया। राजा सुनते ही धबड़ाया और उठकर बैठ गया। अरे..... स्वामी..... क्या है ? आप का क्या काम है ? यह तो कहिये। मेरा तो अपना काम नहीं हैं। भगवान का मंदिर बन रहा है, उसमें पत्थर यहाँ से जाता था, तुमने मना किया है। लेकिन आप का मतलब हम नहीं समझते आप क्या कहना चाहते हैं ? तू पत्थर के लिए मना मत कर। मरकर यमपुरी जायेगा। अरे..... स्वामीजी ..... शांत हो जांय ..... बैठिये..... वैठिये.....।

स्वामी क्रोधमें और भी लाल-पीले हो रहे थे। तुम्हारे पास बैठने लायक है, तूं पत्थर ले जाने के लिये मना कर दिया। राजा ने कहा हां मना किया है। आपके पत्थर का काम हो जायेगा। नहीं, अभी होना चाहिये। स्वामी.... हो जायेगा, परीक्षण चल रहा है। कोई परीक्षण

नहीं, काम अभी होना चाहिये । अभी आप फैसला करो । राजा विचारने लगा - स्वामी तो बड़े हठी है । स्वामीने राजा से स्पष्ट कह दिया कि अभी चौकीदार को बुलाकर कहिये कि दीवान को बुलाकर ले आये । दीवान आये उन्हें राजा ने आज्ञा कर दिया कि अभी तुरन्त स्वामीजी का पत्र तैयार किया जाय, जिसमें लिखा जाय कि अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के लिये जो पत्थर जा रहा था उसे अब कोई रोकेगा नहीं । ऐसा पत्र तैयार कर उस पर सही करके मुहर लगा दिये । स्वामी प्रसन्न होकर अपने झोली में से एक कंठी निकाले और राजा के गले में डाल दिये ।

"..... काल, माया, पाप, कर्म, यमदूत....." जाओ तुम्हारा कल्याण हो । तुम्हारे घर में सत्संग होगा । उस राजा के घर में सत्संग हुआ । मंदिर भी बना । ईडर में जो मंदिर बना उसका सम्पूर्ण खर्च राजा ने किया था ।

मित्रों ! देखा ने ! स्वामीजी का स्वभाव कड़क था । लेकिन उस कड़क स्वभाव को अच्छेकाम के लिये परिवर्तित किया जिससे उत्तम काम में आया । इसी तरह सभी के अलग-अलग गुण-स्वभाव होते हैं । परंतु इसका उपयोग सत्संग के लिये या भगवान के लिए किया जाय तो वह भक्तिरुप बन जायेगा । स्वभाव सद्‌गुण बन जाता है ।

• • •

शूरवीर भक्त जीत जाता है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक समय श्रीजी महाराज सुंदरजीभाई सुथार के घर विराजमान थे । सुंदरजीभाई महाराज की खूब सेवा किये । महाराज की सेवा के साथ आने वाले भक्तों की सेवा तथा संतो की सेवा बड़े प्रेम से करते थे । श्रीजी महाराज सुंदरजीभाई की सेवा से प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहे । आप की निष्ठा से हम प्रसन्न है, आपका प्रेम देखकर हम खूब प्रसन्न हैं ।

सुंदरजीभाई बड़े समझदार थे । महाराज मांगने को कहे तो उन्होंने कहा हमें जगत की कोई वासना नहीं है । भगवान के भक्त किसी पदार्थ में लुब्धनहीं होते । सुंदरजीभाईने महाराज से कहा महाराज ! आप प्रसन्न हों तो ऐसा करें कि "आप सदा हमारे घर में निवास करें । महाराज विचार में पड़ गये । यह वरदान देंगे तो अनंत जीवों का कल्याण रुक जायेगा । फिर भी महाराज ने तथास्तु कह दिया । सुंदरजीभाई प्रसन्न हुये कि महाराज को कभी हम जाने के लिये क्यों कहेंगे । इसलिये महाराज सदा यही रहेंगे ।

थोड़ा समय वीता कि भुज का अधिकारी जगजीवन आ गया । जगजीवन को स्वामिनारायण भगवान के साथ आत्मीय प्रेम था । इसलिये सुंदरजीभाई महाराज के पास गये और कहने लगे कि हमारे घर में बड़ी आफत आने वाली है । जगजीवन बहुत उद्धत हैं । आपको देखेगा तो तूफान करायेगा । इसलिये महाराज आप ऊपर चले जाईएगा । उससे कहदेंगे कि महाराज आये थे लेकिन प्रातः चले गये । थोड़े समय बाद जगजीवन सुंदरजीभाई के घर आता है और महाराजके विषय में पूछता है कि स्वामिनारायण तुम्हारे यहाँ रुके थे । कहाँ गये । सुंदरजीभाईने कहा आये थे लेकिन प्रातः चले गये । लेकिन महाराज ऊपर से आवाज दिये की जगजीवन ! मैं यहाँ हूं बोलो क्या काम है ? जगजीवन का क्रोधबढ गया । अभी तुम्हे पकड़ने के लिए सेना लेकर आता हूँ । इतना कहकर जगजीवन चला गया । सुंदरजीभाई चिंता में पड़ गया । महाराज ! अब क्यां करेंगे ? आप कहिये क्या करना चाहिये ।आप कहे तो यहाँ से कही अन्यत्र चले जाते हैं । महाराज ने कहा मैं चला जाता हूँ । सुंदरजीभाईने कहा हाँ आप यहाँ से चले जाइये । महाराज तो यही चाहते थे । महाराज ने कहा इस समय हम कहाँ जायेंगे ? उसी समय महाराज के दर्शन हेतु गंगाराम मल्ल आया । सुंदरजीभाईने कहाँ आप गंगाराम मल्लके घर जाकर छिप जाइये । महाराज गंगाराम मल्ल के घर रहकर सभा किये । उसी समय जगजीवन की सेना आती है । महाराज ने गंगाराम से कहा अब हम क्या करेंगे ?

मित्रों ! विचारने लायक बात है । कारण यह कि जो वात सुंदरजीभाई से महाराज ने पूछा था वही वात गंगाराम मल्ल से पूछ रहे हैं । अब क्या करेंगे ? सुंदरजीभाई परिस्थिति के संघर्ष से हारजाने के कारण यह भूल गये थे कि मेरे घर में साक्षात् अक्षरधाम के अधिपति हैं । अनंत शक्तियों के स्वामी है । गंगाराम मल्ल तो सुंदर उत्तर दिये कि महाराज जहाँ आप विराजते हैं वहाँ दूसरे का बल नहीं चलता । सामान्य जीव की क्या बात है ।

गंगारामभाई की उत्तम समझ से महाराज खूब प्रसन्न हुए । जगजीवन की सेना कुछ नहीं कर सकी । महाराज गंगारामभाई के घर ही रुके रहे ।

मित्रों ! याद रखना यदि भगवान को अपने घर से जाने न देना हो तो शूरवीर बनना होगा ।

भगवान की इच्छा शक्ति के आगे किसी का कुछ चलता नहीं है । इस प्रकार की शूरवरीता होनी चाहिये ।



मान भयंकर शत्रु है

- सांख्ययोगी उषाबा (सुरेन्द्रनगर)

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण इस पृथ्वी पर प्रगट होकर अनेकों गाँवो में शहरों में विचरण करके अधर्म के मार्ग से हटाकर, सत्संगी बनाकर उनका कल्याण किया। श्रीहरि का आश्रित कौन कहा जायेगा ? जो नियम, निश्चय, पक्ष, आज्ञा, उपासना को रखकर भक्ति करे, तथा क्रोध, लोभ, मान, ईर्ष्या, मत्सर इत्यादि अंत:शत्रुओं का नाश करके भगवान की दृढ भक्ति करे। मान, ईर्ष्या, क्रोधये तीनो काम से भी अधिक खराब है। क्योंकि संत कामी पर दया करते हैं लेकिन मानी पर दया नहीं करते । मान से ईर्ष्या-क्रोधउत्पन्न होता है। इसलिये मान सबसे बड़ा दोष है। मान के कारण ही कितने ही सत्संग में से गिर पडे हैं इसलिये मैं कहती हूँ कि अपमान के कारण ही पतित हुए हैं, न कि काम के कारण।

गोरखवाला गाँव में गुणातीतानंद स्वामी सत्संग कारने गये थे। मंदिर में सभा चल रही थी। वर्षात का समय था। एक हरिभक्त का गारावाला पग देखकर स्वामीने कहा कि पटेल पग धोकर आओ अन्यथा फर्श बिगड़ेगी। हाँ स्वामी फर्श बिगड़े ऐसा काम करने की क्या जरुरत। ऐसा कहकर वह पटेल गया तो गया वापस नहीं आया. स्वामी को ऐसा हो गया कि पटेल को खराब लगा होगा। इसलिए एक भक्त को कहे कि जाकर उसे ले आइये। उस भक्तने काफी आग्रह किया लेकिन वह नहीं आया।

उस के मन में स्वामी के प्रति काफी अवगुण आ गया। वह भक्त मंदिर में आकर स्वामी से कहा। गुणातीतानंद स्वामी ने कहा हमारे कहने से उसे कष्ट हुआ है तो उसकी मांफी मांग कर वापस लाते हैं। वह वापस चला जायेगा तो उसका जीवन बिगड़ेगा। इस प्रकार कहकर अपने साथ एक भक्तको लेकर उस पटेल के घर गये। स्वामी ने कहा अरे पटेल क्यों मंदिर नहीं आते ? पटेलने कहा स्वामी ! आपने पग धोकर आने को कहा है अब मैं पग धोकर आऊँगा। स्वामीने कहा मैं फर्श बिगड़ने की दृष्टि से कहा और तुम बुरा मान गये। चलो मेरी ही गलती है। मुझे माफ कर दो। लेकिन उस पटेल के भीतर का अहंकार बाहर आया और स्वामी से कहने लगा कि मंदिर मैंने बनवाया है। फर्श मैने बन वाया है। आपने भरी सभा में मेरा अपमान किया है। वह मेरे दिल में लग गया है। आप यदि साधु नहीं होते तो मजा चखा देता। स्वामीने कहा, भाई ! हम तो आज आपके गाँव में तो कल दूसरे गाँव में, यह मंदिर तो आपका ही है। फर्श टूटे या बने वह सब आपका विषय है। लेकिन हमारा स्वभाव बोलने वाला है इसलिये बोल दिया। अब तो माफ करदो। उठो चलो मंदिर चलो। यह कह कर स्वामी हाथ पकड़े फिर भी स्वभाव वश पटेल हाथ छुड़ाकर कहा कि स्वामी आप चलो हम पग धोकर आते हैं। साधु-भक्त सभी ने समझाया लेकिन उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह अपना मान छोड़कर मंदिर नहीं आया।

देखे न ! ब्रह्मादिक को भी सत्संग दुर्लभ है। उसे पटेल ने मान के लिये त्याग दिया। ऐसे ब्रह्मनिष्ठ संत घर जाकर समझाये लेकिन मान के कारण स्वामी का वचन नहीं माना। इसलिये मान मोक्ष मार्ग में बाधक है। मान सब से बड़ा अंत:शत्रु है। लेकिन आज तो सभी को मान चाहिये। इसलिये भगवान स्वामिनारायण ने अपने भक्तों को मान रहित रहने की आज्ञा की है। वचनामृत में कहते हैं कि - क्रोध, ईर्ष्या, कपट तथा मान वाले व्यक्ति के साथ हमारी पटरी नहीं खाती। किसी की काम (वासना) के कारण पतन हुआ हो तो उत्थान सम्भव है, लेकिन मानी तो मान के लिये सत्संग भी छोड़ देता है। इसीलिये मुक्तानंद स्वामी लिखते है कि "सांभड बेनी हरि रीझयानी रीत डी। मोहन वर ने मान संगाथे वेर जो।"

साधन सर्वे मान बगाडे पण विषे, जेम भड़ियुं पय साकर मां अहीं झेर जो ॥ इसलिये मान का त्याग कर सत्संग करेंगे तो अवश्य आपना कल्याण होगा। ग.म.प्र.व. में महाराज ने कहा है कि "मान का त्याग करके श्री भगवान की भजन करेंगे उन्हें हरिभक्तों में श्रेष्ठ समझना।

इसलिये मान का त्याग करके दासानुदास होकर धर्मकुल की आज्ञा में रहकर भगवान की भक्ति करना । जो मान रखता है उसका इहलोक तथा परलोक दोनो बिगडता है । धर्मकुल के आश्रय विना मोक्ष का दूसरा आधार नहीं है । जिस प्रकार व्यभिचारिणी स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे में रमण करती है ठीक वही स्थिति है । इसलिये हरिभक्तों को विचार करना चाहिये सभी उजला दूधनहीं होता । एक से मृत्यु होती है, दूसरे से शरीर पुष्ट होती है । आज ऐसे देखने में आता है कि कितने हरिभक्त धर्मकुल के जाने विना जहाँ लाभ मिलता है वहाँ चले जाते हैं । इसलिये मन, वचन, कर्म से धर्मकुल की सेवा करनी चाहिये । वे जिस प्रकार कहें वैसी आज्ञा का पालन करना चाहिये । धर्मकुल को छोड़कर अन्यत्र जायेंगे तो भटकना ही रहेगा । इसके साथ श्री नरनारायणदेव तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं श्रीहरि के वचन का द्रोह भी होगा । जो श्रीहरि के वचन से विमुख हुए हैं वे यही अक्षरधाम मान बैठे हैं क्योंकि उन्हें अक्षरधाम अर्थात् भगवान का धाम मिलने वाला नहीं है । अक्षरधाम का सुख प्राप्त करना हो तो आचार्य महाराजश्री से दीक्षित संत एवं साध्वी लोगों का समागम करना पड़ेगा । धर्मकुल का आश्रय ग्रहण करना पड़ेगा ।

•

भगवान के स्वरुप में दृढ विश्वास

- रमीलाबहन कनुभाई मोदी (हिंमतनगर)

अनंत कोटि सूर्य-चंद्रमां के प्रकाश के समान प्रकाशवाले अक्षरधाम में श्री पुरुषोत्तम भगवान दिव्य मूर्ति के रुप में विराजमान रहते हैं । वही भगवान जीवों के कल्याण हेतु पृथ्वी पर राम कृष्णादि अवतार धारण करते हैं । उस भगवान के स्वरुप का ज्ञान संत समागम से होता है । उसका जीव शुक्ल पक्ष के चन्द्रमां की तरह बढ़ता जाता है । जैसे जैसे परमेश्वर में दृढता बढती जाती है वैसे वैसे चन्द्रमां की तरह जीव की पूर्णिमा के दिन पूर्ण हो जाता है । बाद में इन्द्रियां अंत:करण को डगमगाना चाहें तो भी परमात्मा में दृढता आजाने पर पुन: परमात्मा में कोई दोष दिखाई नहीं देता । संदेह का लेश मात्र अवसर नहीं रहता । परमेश्वर के प्रति जब संदेह जीव के मन में आजाता है तो उस जीव का कल्याण नहीं होता । बल्कि वह पतित हो जाता है ।

जिसे निश्चय नहीं हुआ हो वह सत्संग में रहकर भी घाट करता है । एकवार युधिष्ठिर द्वारका की यात्रा में गये । वहीं पर उद्धवजी मिले । उद्धवजी से प्रश्न किया कि सदा पृथ्वी से ऊँचे रहने वाला मेरा रथ "अश्वत्थामा हत:" इस तरह कहते ही धरती पर क्यों गिर गया ? तब उद्धवजीने कहा ऐसा बोलने से नहीं । परंतु सत्य स्वरुप ऐसे श्रीकृष्ण की आज्ञा का चतुरतापूर्वक अनादर किया "नरो वा कुंजरो वा" इतना अधिक बोलने से आपका रथ जमीन पर गिर पडा । आप अपने लौकिक सत्य पालन करने में अलौकिक सत्य को भूल गये । आपने इष्टदेव भगवान के सिद्धान्तों का आधापालन किया आधा नहीं किया । आपका निश्चय डिग गया । इसलिये रथ जमीन पर गिर गया । भगवान में विश्वास करने वाले का कभी पतन नहीं होता है ।

उद्धवजी की यह बात सुनकर युधिष्ठर की आंखे खुल गई । उन्हे सत्य समझ में आ गया । अपने भूल के कारण ही वे नीचे गिरे और पश्चाताप करना पड़ा । जीव जब भगवान का आश्रय छोडकर अपनी बुद्धिबल को श्रेष्ठ मानता है तभी वह पतित होता है । परमात्मा की दृष्टि उसके ऊपर से हट जाती है ।

जब कि जिसने परमात्मा में विश्वास किया है वह कभी निराश नहीं होता । विश्वास आध्यात्मिक मार्ग की श्वांस है । जिसका विश्वास प्रसस्त है वह अर्जुन की तरह बलवान है । जिसका विश्वास कमजोर है वह युधिष्ठिर की तरह धर्म-नियम पालने पर भी कमजोर है । भगवान का भरोसा दु:ख से दूर करके सुख शांति के साथ आनन्द भर देता है ।

•

भूत

- कंचनबहन बाबुभाई पटेल (रतनपर-मूलीदेश)

एकवार श्रीजी महाराज सभा में बैठे थे । सभी संत बैठे थे । अचानक महाराज ने पूछा, आप सभी को भूत पकड़ सकता है क्या ? साधु को भूत पकड़ सकता है क्या ? यह कैसा प्रश्न, सभी आश्चर्य में पड़ गये । कोई कुछ बोला नहीं । तब महाराज ने हंसते हुए कहा, हमें खबर है । आप सभी को भूत पकड़ता है । लेकिन तीन जन को भूत नहीं पकड़ता । शंका बढती गयी । किसी को कुछ समझ मे नहीं आया । थोड़े समय के बाद महाराजने कहा उन तीन जन में से एक हम दूसरे स्वामी मुक्तानंद तीसरे गोपालानंद स्वामी इन तीनों को भूत नहीं पकड़ता ।

बाद में पुन: कहे, भूत एक ही नहीं है तीन-चार है, जानना है । उन भूतों का नाम तो सुनो एक भूत का नाम है क्रोध, दूसरे का नाम है लोभ, तीसरे का नाम है मान-अभिमान, चौथे का नाम है स्वाद, सभी भूत हैं । ये सभी एकाएक आकर लिपट जाते हैं । इसलिये सावधान रहना चाहिये ।

संतोने कहा - महाराज आप मेरी सहायता में रहियेगा । महाराजने कहा हम सदा आप सभी के साथ रहेंगे । संतोने कहा जब महाराज हमारे साथ है तो दुनिया की कोई ताकत नहीं है जो हमें सता सके । संतो की दृढता देखकर महाराज प्रसन्न हो गये ।



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री
स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ किस शास्त्र को मानना किस शास्त्र को नहीं मानना यह वात शिक्षापत्री के किस श्लोक में लिखा है ?

प्रश्न : २ ''एवी श्रापित बुद्धि छे, ते केम सारी थाय'' ? किस वचनामृत में यह प्रश्न किसने किया है ?

प्रश्न : ३ गधे में से गाय बने, जिस मुख से गाली निकलती थी उस मुख से प्रभु का नाम अविरत चालू हो गया, हाथ में तलवार के बदले माला ले लिये ऐसे वे कौन भक्त थे ?

प्रश्न : ४ सारंगपुर के जीवाखाचर ने प्रभु श्रीहरि से क्या मांगा ?

प्रश्न : ५ ''मने स्वप्ने न गमे रे संसार कोने केम कीजिये रे'' यह उपदेशात्मक उक्ति किसने कही है ?

प्रश्न : ६ नीलकंठ वर्णी प्रभु जब सिरपुर राजा सिद्धवल्लभ को मिले तब राजा के मस्तिष्क में कैसा अविवेक एवं कैसी मान्यता थी ?

प्रश्न : ७ सर्व मंगल स्तोत्र में कितने श्लोक तथा कितने नाम एवं ग्रंथ कर्ता कौन है ?

फरवरी २००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) जब अपना या अन्य का द्रोह हो जाय तो सत्य वचन भी नहीं बोलना चाहिये । (२) मंगला आरती, शृंगार आरती, राजभोग आरती, संध्या आरती, शयन आरती । (३) ब्रह्महत्या, मद्यपान, ब्राह्मण का सुवर्णचोरी, गुरु स्त्री के साथ व्यभिचार तथा चोर का संग । (४) संत को अधिक अभिमान आजाय तो बिमारी से दूर होता है, बिमारी आती ही है । (५) स्वयं को जिस पदार्थ की कामना हो तथा स्वयं जिसमें ममत्व ही उसमें कोई विध्न करें तो क्रोधउत्पन्न होता है । (६) मनुष्य जाति में चार लाख प्रकार के जन्म होते हैं । कीटादि में इग्यारह लाख जन्म होते है, स्थावर जाति में वीस लाख जन्म होते हैं, पशु जाति में तीस लाख जन्म होते है, पक्षी जाति में दश लाख जन्म होते है, जलचर जाति में नव लाख जन्म होते है, कुल चौरासी लाख प्रकार के जन्म बताये गये हैं । (७) पूर्व जिन-जिन विषयों का भोग किया हो अथवा सुना हो उसी की अंतर:करण में इच्छा होना वासना है ।

१. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अहमदाबाद
२. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
३. मंजूबहन आशिषभाई गोरसीया - रतनपुर
४. हरगोविंदलाल चतुरदास पटेल - मोटप
५. अमृतलाल के. मोती - सोजा
६. पटेल गोरधनभाई शंकरदास - सोजा
७. सांख्ययोगी उषाबा, शिल्पाबा - सुरेन्द्रनगर
८. भावसार सुमित्राबहन - विसनगर
९. प्रफुलबहन एस. पटेल - उवारसद
१०. शोभनाबहन एम. परमार - राजकोट
११. मनाणी पुष्पाबहन - जीरागढ
१२. वर्षाबहन अरविंदभाई सोनी - अह्मदाबाद
१३. अरविंदभाई सोनी - अहमदाबाद
१४. सोनी भगवानभाई बेलजीभाई - मोरबी
१५. माधवजीभाई हरखजीभाई आद्रोजा - मोरबी
१६. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगांव
१७. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगांव
१८. ज्योत्सना, चंद्रिका - जीरागढ
१९. भावना कमलेशकुमार खंधडिया - मोरबी
२०. हितेशकुमार हेमराजभाई वाघेला - जामसर
२१. साकरबहन नटवरलाल पटेल - नांदोल
२२. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
२३. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
२४. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
२५. सांख्ययोगी कंचनबा, सांख्ययोगी कुंदनबा - मेड़ा
२६. सोनी मालतीबहन कमलेशभाई - टीकर रणनुं
२७. घनश्यामभाई राजूभाई - आमंदपुरा
२८. ज्योत्सनाबहन राजूभाई - झूलासण
२९. भक्तिभाई, भोलीदास तथा गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झूलासण
३०. पटेल हार्द, हैली किरीटभाई - नरोडा
३१. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलाल
३२. वरु मीनाक्षी कांतिभाई - अंबाला
३३. बाबूलाल पी. भावसार - अहमदावाद
३४. भारतीबहन गोरधनभाई वाघेला - सुरत
३५. सांख्ययोगी मंजूबा, सांख्ययोगी भारतीबा - अहमदाबाद
३६. अरविंदाबहन एम. भावसार - चांदलोड़ीया
३७. वीणाबहनआर. भावसार - नवरंगपुरा
३८. हसुमतीबहन के. ठक्कर - इसनपुर
३९. मीनाबहन महेन्द्रभाई - नरोडा
४०. रेखाबहन कीर्तिकुमार पटेल - ऊँझा
४१. डाभी मफाजी सरदारजी - जांगरवा



संदेश पेपर आयोजित ज्ञान-संस्कार उत्सव

संदेश पेपर दो वर्षो से संस्कार-उत्सव का सुंदर आयोजन करता है।

इस वर्ष ता. २१-२-२००८ से ता. २८-२-२००८ तक नवरंगपुरा, होमगार्ड परेड ग्राउन्ड पर सुंदर आयोजन किया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हमारे कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के लिए ता. २४-२-०८ के दिन संदेश के तंत्री श्री फाल्गुनभाईने वरिष्ठ पत्रकार श्री बिपीनभाई शाहने सुंदर प्रवृत्ति प्रदान की थी। अमहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी को इस विषय में विस्तृत माहिती देकर ज्ञान-संस्कार उत्सव को सफल बनाने का आयोजन किया गया।

ता. २४-२-०८ रविवार की शाम को ५-०० से ७-३० तक नवरंगपुरा के होमगार्ड परेड ग्राउन्ड पर सुंदर सुशोभित विशाल आंगन में हजारो हरिभक्त तथा पूज्यनीय विद्वान संतो की उपस्थिति में प्रथम प्रसिद्ध गायक कलाकार श्री हसमुखभाई पाटड़ीया की संगीत टीमने कीर्तन भक्ति में नंद संतो द्वारा रचित अद्‌भुत कीर्तन भक्ति का आनंद श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून को प्रारंभ करके लिया। कीर्तन भक्ति के कार्यक्रम के बाद संप्रदाय के मूर्धन्य लेखक सुप्रसिद्ध कथाकार पूज्य शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजीने ३० मिनट तक अस्खलित मनमोहक तथा ज्ञान युक्त मधुर वाणी में संस्कार का महत्व, संस्कार बिना का जीवन, शिक्षापत्री में महाराज द्वारा दिया गया ज्ञान तथा आज्ञा से सम्पृक्त अनेक शास्त्र, पुराणों के दृष्टांत सहित समाज में विद्वता के संस्कार प्राप्त करने हेतु धर्म की नीव मजबूत होनी चाहिए। पू. स्वामीने पुरुष-स्त्री, वर्ग अपनी मर्यादा अनुसार एकचित्त मग्न होकर सुन रहे थे।

पू. शा.स्वा. के प्रवचन पूर्ण होते ही अपने पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे तब स्वामिनारायण भगवान तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के जयनाद के साथ सभा में दिव्यता फैल गयी।

पश्चात उन्होंने इस आयोजन में भाग लिया तथा खूब परिश्रम पूर्वक उसका संचालन भी किया है वैसे अपने मंदिर के युवान कोठारी शास्त्री धर्मकिशोरदासजी ने अपनी मातृभाषा हिन्दी में सुंदर वक्तव्य देते हुए कहा कि आज देश, राज्य तथा समाज में युवा वर्ग को चोटदार वाणी में संबोधित करते हुए कहा कि अपने बच्चों का हाथ पकड़कर मंदिर ले आओ। परंतु यह तब संभव होगा जब संस्कारो को परंपरा तथा वारसा में प्रदान किये जाएंगे। उसका परिणाम या फल श्रुति वृद्धावस्था में मिलेगी तब वही बालक-पुत्र आपका हाथ पकड़कर आपको मंदिर ले जाएगा।

वास्तव में ऐसे नवयुवान संत के पास अपेक्षा से भी अधिक ज्ञान प्राप्त हुए। ऐसे संतो के कारण ही संप्रदाय का कल्याण होगा। दोनो विद्वान पू. वक्ताश्रीने संदेश परिवार के तंत्रीश्री फाल्गुनभाई पटेल के इस आयोजन को धन्यवाद दिया।

अंत में हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद के साथ कहा की ज्ञान-संस्कार प्राप्त करने हेतु छोटी सी शिक्षापत्री के २१२ श्लोक में से कुछ श्लोको का पालन किया जाय तो अपने आप ही संस्कारमय वातावरण का निर्माण होगा। आज मनुष्य भौतिक सुख के पीछे भागते है। गाड़ी, बंगला, एरकन्डीशन, बड़ी से बड़ी मोड़ल की गाड़ी लेने के बाद क्या ? परमात्मा के साथ सम्बन्धजोड़ने से ही अपेक्षा कम हो सकती है। सीमित हो जाती है। उसी प्रकार ज्ञान-संस्कार के लिए भगवान को साथ रखना चाहिए। मंदिर जाना, संतो द्वारा अच्छी बाते सुनना, समाज के उपयोगी होना चाहिए ऐसे संस्कार दिये जाये तो अपने आप संस्कार आयेंगे।

अनेक दृष्टांत के साथ प.पू. महाराजश्रीने संस्कार-ज्ञान के लिए मार्गदर्शन देकर आशीर्वाद दिया। उसके बाद इस आयोजन के स्पोनसर तथा प.पू. महाराजश्री के कृपापात्र प.भ. प्रविणभाई कोटक तथा पत्रकारश्री बिपीनभाई शाह का सन्मान करके आशीर्वाद दिये।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी आदि अनेक संत महानुभाव उपस्थित रहे थे। हमारे अहमदाबाद तथा आस-पास के गाँव के हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभी सभ्य उपस्थित रहे। श्री उदयनभाई महाराजने आभार विधी की थी।

- वी.पी. स्वामी

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर द्वारा गाँव में हुई सत्संग सभाएँ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा परम पूज्य बड़े महाराजश्री अपने संतो को गाँव में सत्संग-पोषण के लिए वारंवार आज्ञा करते है। जो संत गाँव में सत्संग की प्रवृत्ति करते है उनके समाचार पू. आचार्य महाराजश्री को ज्ञात होता है तो संतो के ऊपर अति प्रसन्न होते है। हमारे कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी को भी इस आज्ञा का पालन करने के लिये उनके नवयुवान शिष्य स्वामी धर्मकिशोरदास तथा शास्त्री माधवप्रसाददास (अयोध्या महंत देवस्वामी शिष्य) आदि संतो को गाँव में सत्संग सभा करने की प्रेरणा दी।

पिछले महीने जीवराजपार्क तथा घाटलोड़ीया मंदिर में शाम को हरिभक्तो के समय की अनुकुलता में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य, धर्मकुल का माहात्मय, सत्संगियों का धर्म-नित्य, नियम, निष्ठा तथा दशांश, विशांस धर्मादा देने हेतु दृष्टांत के साथ शास्त्रो के प्रमाण के साथ कथावार्ता, नित्य, नियम तथा कीर्तन-भक्ति महामंत्र धून, ठाकुरजी की थाल-आरती आदि कार्यक्रम करके उपरोक्त गाँव में तथा शहर में भक्तजनो को भक्ति में मग्न किया था।

- कोठारी शास्त्री स्वामी रामानुजदासजी

माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिव्य शाकोत्सव

माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा अन्नपूर्णा पार्टीप्लोट में ता. १३-१-०८ रविवार को प्रातः शाकोत्सव तथा सत्संग सभा का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर हो रहा था । साधु चंद्रप्रकाशदास, साधु पूर्णप्रकादासजी आदि संत मंडलने धून, भजन, कीर्तन तथा शा. सिध्धेश्वरदास तथा उनावा के महंत स्वामीने देव, आचार्यश्री की महिमा, ज्ञान की बातें की थी।

महंत शास्त्री स्वामी धनश्यामप्रकाशदासजीने चोटदार शैली में शिक्षापत्री की आज्ञा अनुसार देव-आचार्य की वफादारी के साथ सत्संग में ओतप्रोत होने की सूचना दी थी। सभा संचालन प.भ. ईश्वरभाई पटेलने कुशलता पूर्वक किया था। अंदाजित ३००० से भी अधिक भाविको ने शाकोत्सव को मनाया था। इस प्रसंग पर बहनो की सेवा भी उत्तम थी।

- शा. भक्ति केशवदास

महेसाणा मंदिर में खिचड़ी उत्सव मनाया गया

शाकोत्सव तो सभी स्थानो पर होता है परंतु खीचड़ी उत्सवतो महेसाणा में ही होता है। दोसौ वर्ष पहेला सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान ने पांचसौ परमहंसो के साथ महेसाणा में आंबली चौद-जोषी की गली में परम भक्त कलशीबाई का मनोरथ पूर्ण करने हेतु शाम को खीचड़ी का भोजन किया था। दूसरे दिन एकादशी होने के बावजूद प्रातः में उन्होंने साम की बची हुई खिचड़ी खाई थी। ऐसी ही अद्‌भुत लीला आज ता. ११-१-०८ शुक्रवार के दिन हुई थी। जिस के उपलक्ष में संप्रदाय के मूर्धन्य सुप्रसिद्ध वक्ता कथाकार पू. पी.पी. स्वामी ने अपने सुमधुर कंठ से इस प्रसंग का वर्णन किया था। उसके बाद हमारे प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे उनके वरद् हाथों से खीचड़ी का वधार किया गया तब मेहसाणा हाईवे का विस्तार दिव्य तथा अलौकिक बन गया। महेसाणा तथा आसपास के गाँव से हजारो हरिभक्त पधारे थे। महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा शा. उत्तमप्रियदासजी के मार्गदर्शन तथा प्रेरणा से महोत्सव धूमधाम से मनाया।

- हितेन्द्रसिंह राओल, मेहसाणा

नारायणघाट मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २६-२-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज आदि स्वरुपों का वेद-विधिपूर्वक षोडशोपचार पाटोत्सव - महाभिषेक धूमधाम से संपन्न हुआ । महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अ.नि.प.भ. बालचंद्रदास पटेल (गवाड़ा वाले के पुत्र के परिवारने सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन, अर्चन, आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। प्रासंगिक सभा में शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा छोटे पी.पी. स्वामी तथा अन्य संतोने प्रसंगोचित प्रवचन किया। समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

हजारों की संख्या में भक्तोंने पाटोत्सव का तथा अन्नकूट का दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था। *- शा. रामकृष्णदासजी*

नवावाडज मंदिर

वाड़ज के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १८-१-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

जिसके मुख्य यजमान प.भ. वालजीभाई धरमशीभाई गांगाणी (माणामोरावाला) तथा पटेल कनुभाई पूनाभाईने लाभ लिया था। प्रासंगिक सभा में छोटे पी.पी. स्वामीने महिमा के साथ बाते की थी। इस प्रसंग में हरिभक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी । अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद प्रदान किया था। इस मंदिरमें धनुर्मास भी धूमधाम से मनाया गया था।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, नवावाडज

साबरमती श्री स्वामिनारायण मंदिर

ता. २३-१२-०७ के दिन साबरमती सत्संग समाज की तरफ से कोटेश्वर गुरुकुल में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया था। इस प्रसंग पर छोटे पी.पी. स्वामी तथा शा. रामकृष्णदास ने भगवान का माहात्म्य समझाया था।

ता. ७-१-०८ सोमवार को प्रातः ५-४५ बजे हमारे प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धनुर्मास धून में पधारकर सभी भक्तों को अलौकिक दर्शन का सुख प्रदान किया था। *- रावजीभाई टी. पटेल*

ईडर सापावाडा मंदिर में जपयज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी तथा सापावाड़ा के महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से ईडर तथा सापावाड़ा में पवित्र धनुर्मास

में बड़ी संख्या में हरिभक्त ब्राह्ममुहूर्त के समय जपयज्ञ में जुडे थे। साबरकांठा ठन्डी के समय महामंत्र धून का माहोल बहुत उत्साहजनक था। *-अमृत भगत ईडर*

साबरकांठा में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ईडर के महंत जगदीशप्रसाद स्वामी की प्रेरणा से ईडर देश के मणीयोर, अरोंडा, साचोदर तथा उमेदगढ के मंदिरो में धूमधाम से शाकोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर सापावाडा, मदुदरा, हिंमतनगर आदि स्थानो से पधारे हुए संतोने आशीर्वाद तथा भगवान के माहात्म्य का लाभ लिया था।- *हरिभाई अरोडा*

वडु में प.पू. गादीवालाश्री की शुभ उपस्थिति में महिला सत्संग शिबिर का आयोजन

दंढाव्य प्रदेश के श्रीजी महाराजकी प्रसादी का तथा सत्संग के लिये प्रसिद्ध कड़ी तालुका के वडु गाँव में ता. १०-२-०८ के दिन हमारी समस्त बहेनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की शुभ उपस्थिति में महिला सत्संग शिबिर का सुंदर आयोजन संपन्न हुआ था।

वडु गाँव के आसपास के डांगरवा, करजीसण, भवपुरा, राजपुरा, मोखासण आदि गाँव के २००० से भी अधिक सत्संगी बहनोने इस शिबिर में उपस्थित थी। पटेल सांख्ययोगी बहेनोने श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून से शिबिर का आरंभ किया था। प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री का शुभ आगमन हुआ तब उनका स्वागत बहनोने उत्साहपूर्वक किया। पू. गादीवालाश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुई थीं। यजमान डही बहन रामदास पोलीदास पटेल परिवार की बहनोने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का पूजन, अर्चन, आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त की थीं। सभा में सांख्ययोगी बहनें तथा कर्मयोगी बहनोने संप्रदाय की परंपरा, श्री नरनारायणदेव गादी की निष्ठा तथा सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के माहात्म्य का वर्णन किया था। समस्त बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा अनुसार प्रत्येक बहनें गाँव में, मंदिर में सत्संग सभा करें और जहाँ मंदिर न हो वहाँ घर में सत्संग सभा करनी चाहिए तथा मूल संप्रदाय तथा श्री नरनारायणदेव गादी के अलावाँ किसी से भी नाता नहीं रखना चाहिए या मंदिर में अन्य कोई केलेन्डर, तसवीर, पत्रिका नहीं लगानी चाहिए। तभी हम नरनारायणदेव के यथार्थ हरिभक्त कहे जायेंगे।

-वडु गाँव की समस्त बहनगण

देलवाडा में शाकोत्सव मनाया गया

देलवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २४-१-०८ के दिन शाकोत्सव के आयोजन हेतु रात्रि में ८-३० बजे आयोजित सभा में शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजीने भगवान की महिमा, माहात्म्य का वर्णन किया था।

ता. २५-१-०८ के शुक्रवार के दिन आनंदवाड़ी होल में प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव मनाया गया। जिसमें गाँव के भक्तोंने लाभ लिया।

इस प्रसंग पर सभा में शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी तथा माणसा के महंत स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने सर्वोपरि श्रीहरि के लोया शाकोत्सव का वर्णन किया। अंत में समस्त सभा को प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था।

शाकोत्सव में नारायणभाई, अंबालालभाई, रेवाभाई, किरीटभाई, तुलसीभाई, अमृतभाई, घनश्यामभाई, बाबूभाई, भरतभाई, रमेशभाई, मुकेशभाई, भगुभाई, मणीकाका खांडवाला, कानजीभाई, चन्दुभाई, प्रहलादभाई इत्यादि भक्तजन सेवा का लाभ लिये थे।

श्री मणीभाई खांडवाला के सौजन्य से श्री स्वामिनारायण मासिक के १० वंशपरम्परागत सदस्य बनाये गये थे। इन लोगोने आजतक १३०० जितने वंश परंपरागत सभ्य प्रतिनिधिके रुप में सेवा करके प्रेरणा रुप बने हैं। *-कोठारीश्री दलवाडा*

बालासिनोर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री जयंती के निमित ठाकुरजी का अभिषेक करके पूजन-अर्चन-आरती करके शिक्षापत्री का सम्पूर्ण पाठ शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने किया था।

सायंकाल ४ बजे ठाकुरजी की विजय सवारी हरिभक्तो के विशाळ समूह के साथ शहर के राजमार्ग पर निकली थी। वापस धून-कीर्तन करते हुए मंदिर आई थी। मंदिर में भक्तों के लिये महाप्रसाद की व्यवस्था की गई थी। इस कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था रमेश भगत एवं हार्दिक भगत ने की थी। *-कोठारीश्री*

अमराई वाडी मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमराईवाडी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वा. नारायणस्वरुपदासजी की प्रेरणा से शा. विश्वस्वरुपदासजी ने ठाकुरजी के पाटोत्सव प्रसंग पर महापूजा, अन्नकूट इत्यादि में भाग लिया था।

प्रासंगिक सभा में विश्वस्वरुपदासने, धरियावद के महंत स्वामी इत्यादि संतोने प्रेरक प्रवचन किया था। मुक्तराज स्वामी तथा नित्यस्वरुपदासकी प्रेरणा से यह कार्य सम्पन्न हुआ। *-करण भगत*

नांदोल मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से नांदोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का ३ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर पू. ध्यानी स्वामी संत मंडल के साथ एक दिन पहले पधारे थे। रात्रि में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था।

पाटोत्सव के शुभ दिन पू. ध्यानी स्वामीने प्रातः ठाकुरजी का पंचामृत, अभिषेक, महापूजा, आरती के बाद अन्नकूट का भोग लगाया था। ठाकुरजी का अन्नकूट बहनोने प्रेम तथा श्रद्धा से बनाया। पाटोत्सव के यजमान प.भ. नयनाबहन महेशभाई पटेल थीं।

प्रासंगिक सभा में पू. ध्यानी स्वामीने देव, आचार्य की महिमा के

साथ सभी को महाराजकी आज्ञा अनुसार वर्तन करने का अनुरोधकिया था। यजमान परिवार तथा सेवा भावी हरिभक्तो का स्वामी ने फुलहार से सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे। *- कोठारी विष्णुभाई पटेल*

गुलाबपुरा

गुलाबपुरा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अ.नि.पू. शा. स्वामी हरिस्वरुपदासजी तथा अ.नि. स्वामी कृष्णजीवनदासजी की दिव्य प्रेरणा से, अ.नि.प.भ. कालीदासभाई के पुण्य स्मरण हेतु उनकी धर्म पत्नी गं.स्व. नायीबा के संकल्प से उनके परिवार ने श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण शा.स्वा. घनश्यामदासजी (माणसा महंत) के वक्तापद पर तथा संहिता पाठ के वक्ता शा.श्रीजीप्रकाशदासजी (शोकली) बने थे।

इस प्रसंग पर ता. २०-१-०८ के दिन यजमान परिवार के आमंत्रण से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे उनका स्वागत गाँव के हरिभक्तोने धूमधाम से किया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दोनो मंदिरो में आरती करके सभा में पधारे थे। पारायण की पूर्णाहुति करके आरती उतारी थी। यजमान परिवार के श्री गांडाभाई, श्री सोमाभाई, श्री अमृतभाई तथा श्री विष्णुभाईने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती करके श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में रु. १ लाख रकम अर्पण की थी। मा श्री मंगलभाई पटेल इस प्रसंग पर पधारे थे तथा पू. महाराजश्री का दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

इस ज्ञानयज्ञ में रघुवीर स्वामी, महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी, महंत जगदीश स्वामी, सापावाडा मंहत श्याम स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत मंडलने पांच दिन मार्गदर्शन दिया था। सभा संचालन शा. छपैयाप्रसाददासने किया था। यजमान परिवार की तरफ से उत्तम प्रसाद की व्यवस्था की गई थी। *- गांडाभाई कोठारी*

मोडासा में कथा

प.पू. महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मंदिर में शा. हरिजीवनदासजी ने तथा शा. विश्वस्वरुपदासने कथा का सुंदर लाभ देकर सर्वोपरि श्रीहरि का माहात्म्य कथा में समझाया था।

- कोठारी नारणभाई पटेल

वणझर (सरखेज) मंदिर में शाकोत्सव

ता. २६-१-०८ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर वणझर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से प्रथम गाँव में प्रजासत्ताक दिवस के निमित ध्वजवंदन हुआ उसके बाद मंदिर में ठाकुरजी की आरती के बाद उन्हीं के हाथों से शाकोत्सव का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया।

इस प्रसंग पर आयोजित सभा में स्वामी बालकृष्णदासजी तथा सत्संग संकल्पदास ने श्रीजी महाराज की महिमा के साथ बातें की थी। समस्त सभा को पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया। श्री राजुभाई, प्रकाशभाई, रमणभाई तथा श्री भरतभाई ठक्करने इस प्रसंग में सुंदर सेवा की थी। *- राजुभाई ठक्कर*

जीवराजपार्क में शाकोत्सव मनाया गया

ता. २०-१-०८ के दिन शाकोत्सव मनाया गया। मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री। ता. २०-१-०८ के दिन जीवराजपार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे।

प्रासंगिक सभा में शा. हरिकृष्णदासजी तथा राम स्वामीने प्रसंगोचित प्रवचन किया था। इसके बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा के बाद शाकोत्सव में पधार कर अलौकिक दर्शन का लाभ दिया था।

इस प्रसंग पर स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंत) वी.पी. स्वामी (जेतलपुर) छोटे पी.पी. स्वामी आदि संत मंडल पधारकर लाभ दिया था। शाकोत्सव का लाभ प्राप्त कर भक्तजन दिव्यता का अनुभव किये थे। *- भरतभाई ठक्कर*

चलोडा (जीनवाका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में धनुर्मास दरम्यान सतत एक घंटे तक महामंत्र धून, भजन, कीर्तन का आयोजन किया गया था। ता. ४-१-०८ के दिन धोलका के महंत शा. स्वामी पूर्णप्रकाशदासजीने संत मंडल के साथ पधारकर कथा-प्रवचन का लाभ दिया था।

ता. १८-१-०८ के दिन जेतलपुर वाड़ी के संत तथा ता. १९-१-०८ के दिन अंहमदाबाद मंदिर के को. धर्मकिशोरदासजी, स्वामी माधवदासजी सभा में पधारकर एकादशी का महत्व क्या है ? सत्संगी किसे कहा जाय ? इत्यादि विषयो पर ज्ञानप्रद प्रवचन किये थे। अंत में संत ठाकुरजी की आरती तथा धुन करके विदा हुए थे। *- जयंतीभाई पटेल*

लालोडा मंदिर में कथा पारायण

साबरकांठा के ईडर ता., लालोडा गाँव श्री स्वामिनारायण मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. घनश्यामजीवनदासजी की प्रेरणा से उनके शिष्य स.गु. स्वा. मोहनप्रसाददासजी के स्मरणार्थे ता. ९-२-०८ से १५-२-०८ तक पू. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था। संहिता पाठ में शा.स्वा. भक्तिवल्लभदासजी थे। सभा संचालन शा. भक्तिप्रकाशदासजीने किया था। इस प्रसंग पर सातो दिन भक्तों को महाप्रसाद (भोजन) का लाभ मिला था। अहमदाबाद से प.पू. बड़े महाराजश्री, पूर्णहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा बहनों को दर्शन देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारी थी। श्रीहरि के अपर स्वरुप के दर्शन एवं आशीर्वाद से संत-हरिभक्तों को अलौकिक सुख मिला था। समग्र उत्सव में पू. घनश्यामजीवनदासजी के शिष्य स्वा. विश्वप्रकाशदासजी स्वा. बालकृष्णदासजी तथा जेतलपुर से श्याम स्वामी, नाथद्वारा के महंत धर्मस्वरुपदासजी इत्यादि संतो की सेवा सराहनीय थी। *- शा.माधवस्वामी, जेतलपुर*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

हरिपर श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहलो का)

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला की आज्ञा से तथा मरघाबा की प्रेरणा से सत्संग की विशेष जागृति के लिए दि. २३-१-०८ से २७-१-०८ पर्यन्त श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण सांख्ययोगी कोकीलाबा (गु.सां. कमळाबा) के वक्तापद पर हुई।

इस प्रसंग पर दि. २७-१-०८ को प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारी थीं तथा सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति कर दिव्य शाकोत्सव में पधार कर बहनो को अकल्पनीय सुख प्रदान कर प्रशन्न होकर आशीर्वाद प्रदान किये। जिसका सांख्ययोगी तथा कर्मयोगी बहनोने खूब लाभ लिया था। *- देविकाबहन शुक्ल*

पाटणी मंदिर

यहाँ स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से दि. ६-१-०८ रविवार को समस्त गाँव के लोगो ने एकत्रित होकर शाकोत्सव मनाया। इस अवसर पर शा. रामकृष्णदास तथा संत मंडलने सर्वोपरि श्रीहरि महाराज, नरनारायणदेव-आचार्य महाराजश्री की महिमा समझाया था। सांख्ययोगी बहनोने खूब सुंदर सेवा कर समस्त गाँव को प्रसाद खिलाया था।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.S.A.)

अमेरिका के कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से धनुर्मास के आखिरी दिन समूह महापूजा का आयोजन हुआ था। सुबह ९ से १२ के दौरान पूजा संस्कृत श्लोको से विधिवत हुई थी। समग्र मंदिर उत्तरायण के कारण पतंगो से शोभायमान था। पूरा होल यजमानो से भर गया था। स्वामीने उत्तरायण पर्व के माहात्म्य के साथ धनुर्मास की पूर्णाहुति की थी। इस दिवस दान-पुण्य का बहुत माहात्मय है। यह शास्त्रीय विधान खूब सरलतापूर्वक स्वामीने समझाया था। हरिभक्तो ने बड़ी संख्या में इसका लाभ लिया था। *- प्रविणभाई शाह*

लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.K.)

लेस्टर स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से दि. २-८-०८ को भव्य शाकोत्सव भक्ति महिला मंडल के सहयोग से मनाया गया था।

इस अवसर पर पुजारीश्रीने शाकोत्सव की लीला अद्‌भूत रुप से बतायी थी। ठाकुरजीका दर्शन आज खूब भव्य लगता था जैसे खुद शाकोत्सव कर रहे हों। इसके यजमान प.भ. विनोदभाई लक्ष्मणभाई चौहान परिवार (श्रीजी टेलर्स) थे। रात ८-०० बजे ठाकुरजीकी आरती के साथ उत्सवपूर्ण हुआ था। हरिभक्तोने बड़ी संख्या में उपस्थित रहकर लाभ लिया था।

दि. ८-२-०८ से दि. १०-२-०८ पर्यन्त वसंत पंचमी शिक्षापत्री पर पुजारी रसिकभाई जानीने श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य का कथामृत पान करवाया था।

इस अवसर पर मुख्य यजमान प.भ. रणछोड़भाई गंगादासभाई चोटलीया परिवार तथा सह यजमान प.भ. पार्वतीबहन केन ओवरडन थे। दि. ११-२-०८ शिक्षापत्री जयंती वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन कर आरती समूह में की गई थी। इस अवसर का कवरेज कर यु.के. आस्था चेनल का रिपोर्ट कर के सभीको दर्शन करवाये यजमान परिवारो का सन्मान श्री जीवराजभाई टांकने किया था। तथा वक्ताश्री का सन्मान मंदिर की कार्यवाहक समिति के सभ्योने किया था। कई हरिभक्त दर्शन कर धन्य हुए थे। *- किरणभाई भावसार*

सीडनी (I.S.S.O., ओस्ट्रेलीया)

सीडनी के अपने स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति खूब सुंदर प्रकार से चल रही है। दिसम्बर-जनवरी में नीचे के हरिभक्तों की तरफ से सभा हुई थी।

दि. २-१२-०७ प.भ. धर्मेश वडोदरीया, ९-१२-०७ प.भ. बीपीनभाई पटेल, १६-१२-०७ प.भ. दीपकभाई पटेल, २३-१२-०७ प.भ. रितेष तथा मितल, ३०-१२-०७ प.भ. मनोज तथा केवल भारद्वाज इत्यादि हरिभक्त यजमान बन कर समूह में कथावार्ता, धून-भजन, नित्य नियम तथा ठाकुरजी को थाल किया था।

दि. १-१-०८ को इस मंदिर का तीसरा वार्षिक पाटोत्सव खूब धामधूमपूर्वक मनाया गया था।

इस अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से यहाँ पधारे अपने भुज मंदिर के संत स्वामी हरिजीवनदास, स्वामी घनश्यामजीवनदास तथा स्वामी विज्ञानदासने केशर-चंदन आदि पंचामृत से श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक कर महा आरती उतारकर दर्शन का दिव्यलाभ दिया था। प्रासंगिक सभा में संतोने सर्वोपरि श्रीहरि का माहात्म्य तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा बताया था। तथा कथा का महालाभ दिया था। पाटोत्सव के यजमान प.भ. अंजलेशभाई पटेल बने थे।

दि. ६-१-०८ को आयोजित सभा में यजमानश्री शैलेषभाई तथा भाविनी बहन पटेल बने थे। उत्तरायण महोत्सव भी धूमधूम से मनाया गया। प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृति सुंदर प्रकार से चल रही है।

ओलपाड में सत्संग सभा

यहाँ ओलपाड में श्रीजी महाराज नंद संतो के साथ पधारे थे इसलिये यह भूमि दीव्य तीर्थभूमि है। प.पू. बड़े महाराजश्री ने भी यहाँ पधारकर सभी को दर्शन सुख दिया।

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से हर गुरुवार को अलग-अलग हरिभक्तो के घर सत्संग सभा की जाती है। २७३ वचनामृत, नित्य-नियम, थाल, आरती, सब किया जाता है। मूल संप्रदाय की परंपरा तथा मूलीश्री राधाकृष्ण तथा आचार्य महाराजश्री की वफादारी हालार के प्रत्येक हरिभक्त में हैं। प.पू. बड़े महाराजश्री सदैव आशीर्वाद देकर पीठबल देते रहते हैं। - *शांतिलाल वरु*

लेखको को नम्र सूचन

अपने श्री स्वामिनारायण मासिक में अपने विद्वान संत तथा लेखक सुंदर, मननीय और ज्ञान से भरे हुए लेख लिखते है, जो सभी को रुचिकर लगते है।

किन्तु दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि जिनको लिखने न आता हो तथा शास्त्र तथा संप्रदाय का ज्ञान न हो वे लेख लिख कर न भेजे। यह पत्रिका देश-विदेश में भेजी जाती है जिसे सैंकड़ो लोग पढते है। कुछ लोग दूसरी पत्रिका, पुस्तक में से ही संपूर्ण लिख कर भेजते है। सभी को मेरा नम्र सूचन है की सत्संग-शास्त्र का अभ्यास कर लेख लिखे। आप सभी हमारे आत्मीय है तथा सत्संगी है इसलिये ये नम्र सूचन कर रहे है।

गत फरवरी २००८ के अंक में भक्तिसुधा में "महाराजकी मूर्तिका ध्यान" लेखक दिशाबहन हितेशभाई राठोडने गांधीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२ पू. ध्यानी स्वामी के शिष्य द्वारा लिखी गयी 'ध्यान' से सीधा लिख दिया था। जो योग्य नहीं है एक जुर्म है। लेखिका बहन को भी सूचन इस प्रकार लेख लिख कर न भेंजे।

गत फरवरी - २००८ में एप्रोच मंदिर के शाकोत्सव के यजमान गलत लिखा गया था। परंतु यजमान प.भ. हरजीभाई वालजीभाई माणीया थे।

अपने आनेवाले उत्सव

चैत्र सुद - नवमी दि. १४-४-०८ सोमवार रामनवमी का उत्सव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का प्राकट्य दिवस तथा अहमदाबाद अक्षरभुवन घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक अहमदाबाद मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से धामधूमपूर्वक मनाया जायेगा।

चैत्र वद - तीज दि. २३-४-०८ बुधवार को प.पू. बड़े महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का जन्मदिवस सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में संत-हरिभक्तो द्वारा धामधूम से मनाया जायेगा।

फाल्गुन वद - आठम दि. ३०-३-०८ रविवार जेतलपुर धाम मं बिराजमान सर्वोपरि श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज आदि स्वरुपो का पाटोत्सव-अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से धामधूमपूर्वक मनाया जायेगा।

प्रत्येक प्रसंग में समस्त सत्संगीजनो को दर्शन का महालाभ लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

जुनागढ श्री स्वामिनारायण मंदिर के शा.स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी के गुरु वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध संत पुराणी स्वा. नारायणमुनिदासजी (पू. गुरु स्वामी) माघ शुक्ल-३ दिन शनिवार ता. ९-२-०८ को श्रीजी महाराज का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

आसनसोल : श्री नरसिंहभाई मोहनभाई पानशेरिया (उम्र ९३ वर्ष) श्री मनहरभाई तथा श्री प्रफुलभाई के पिताजी ता. २१-१२-०७ के दिन श्रीजी महाराज का अकंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

मोरबी : श्रीमती पश्वीबहन हरगोविंदभाई ता. २५-१-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अभरनिवासी हुई हैं।

मोटप : श्री केशवलाल कानजीदास पटेल (मू.पू. कोठारी) श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

ढांगला : श्री चंपकलाल के पिताजी श्री खोड़ाभाई हरसुरभाई काठी ता. ३-२-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.पू. आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र (श्री भालजा साहब के मंडल के उत्साही सदस्य) श्री घनश्यामभाई मूलजीभाई ठक्कर (दूधवाला) ता. ८-२-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हु अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।















१. महेसाणा में भव्य मंदिर निर्माण का काम तीव्र गति से चल रहा है, जिसकी तस्वीर

२. भाउपुरा गाँव में शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री

३. भाउपुरा (त. कलोल) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद आह्वान मंत्र विधि करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

४-५-६-७ भाउपुरा मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग पर विशाल सभा में आशीर्वाद देते हुए श्रीहरि के छठे, सातवें, आठवें, वंशज

अहमदावाद मंदिर में हवेली में सुख शैया के लिये सुवर्णदान का उत्तम समय

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रसादी की ऐतिहासिक गादीवालाजी की हवेली में श्रीहरि के शयन हेतु सुख शैया सिंहासन जीर्ण-शीर्ण हो गया था। जिसे सुवर्ण द्वारा मंडित करने का कार्य प्रारंभ हो गया है। जो सत्संगी बहनें इस अलौकिक भगवान के सुख शैया में सुवर्ण दान करना चाहती है, उनके लिये यह सुनहरा अवसर प्राप्त है।

इसके लिये सोना अथवा नगद रुपये स्वीकार किये जायेंगे। जिसकी पक्की रसीद हवेली या कोठार की आफिस से प्राप्त की जा सकती है।

- महंत स्वामी

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08











१. लालोडा (त. ईडर) पारायण प्रसंग पर भव्य शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री
२. प.पू. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में कथामृतपान कराते हुए कथाकार पू. पी.पी. स्वामी
३. लालोडा मंदिर के वयोवृद्ध महंत स्वामी घनश्यामजीवनदासजी का सन्मान करके आशीर्वाद देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री
४. संदेश पेपर आयोजित ज्ञान संस्कार उत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में मूल संप्रदाय पर वक्तव्य देते हुए पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी तथा शा. धर्मकिशोरदासजी

Shrenik Arts (079) 26580916, 9879006686